

Proctor
Proctor
Proctor

PERSONAL NOTES

Name..... अज्ञेयनाथ हण्डू सुपुत्र श्री सर्वानन्द हण्डू

Address..... भा. ज्योतीलालकर रैगावारी
श्रीनगर काहसी रैगा

Tel. No. { Residence..... Yes
Office..... No

Motor Car No..... No

Premium Due..... No

Telegraphic Address..... No

Motor Lic. Ren. Due..... No

Driving Licence No..... No

Life Ins. Policy No..... No

General..... No

TABLE OF DAILY WAGES

Rupees per month	28 days	29 days	30 days	31 days
	Rs. P.	Rs. P.	Rs. P.	Rs. P.
1	.04	.04	.03	.03
2	.07	.07	.07	.06
3	.11	.10	.10	.10
4	.14	.14	.14	.13
5	.18	.17	.17	.16
6	.21	.20	.20	.19
7	.25	.24	.23	.22
8	.29	.28	.27	.26
9	.32	.31	.30	.29
10	.36	.34	.33	.32
15	.54	.52	.50	.48
20	.71	.69	.67	.65
30	1.07	1.03	1.00	.97
40	1.43	1.38	1.33	1.29
50	1.79	1.72	1.67	1.61
60	2.14	2.07	2.00	1.94
70	2.50	2.41	2.33	2.26
80	2.86	2.76	2.67	2.85
90	3.21	3.10	3.00	2.90
100	3.57	3.45	3.33	3.22

CALENDER 1973

S M T W T F S	JANUARY				FEBRUARY				MARCH						
		7	14	21	28		4	11	18	25		4	11	18	25
	1	8	15	22	29		5	12	19	26		5	12	19	26
	2	9	16	23	30		6	13	20	27		6	13	20	27
	3	10	17	24	31		7	14	21	28		7	14	21	28
	4	11	18	25		1	8	15	22		1	8	15	22	29
S M T W T F S	5	12	19	26		2	9	16	23		2	9	16	23	30
	6	13	20	27		3	10	17	24		3	10	17	24	31
	APRIL				MAY				JUNE						
	1	8	15	22	29		6	13	20	27		3	10	17	42
	2	9	16	23	30		7	14	21	28		4	11	18	25
	3	10	17	24	31	1	8	15	22	29		5	12	19	26
S M T W T F S	4	11	18	25		2	9	16	23	30		6	13	20	27
	5	12	19	26		3	10	17	24	31		7	14	21	28
	6	13	20	27		4	11	18	25		1	8	15	22	29
	7	14	21	28		5	12	19	26		2	9	16	23	30
	JULY				AUGUST				SEPTEMBER						
	1	8	15	22	29		5	12	19	26	30	2	9	16	23
S M T W T F S	2	9	16	23	30		6	13	20	27	31	3	10	17	24
	3	10	17	24	31		7	14	21	28		4	11	18	25
	4	11	18	25		1	8	15	22	29		5	12	19	26
	5	12	19	26		2	9	16	23	30		6	13	20	27
	6	13	20	27		3	10	17	24	31		7	14	21	28
	7	14	21	28		4	11	18	25		1	8	15	22	29
S M T W T F S	OCTOBER				NOVEMBER				DECEMBER						
		7	14	21	28		4	11	18	25	30	2	9	16	23
	1	8	15	22	29		5	12	19	26	31	3	10	17	24
	2	9	16	23	30		6	13	20	27		4	11	18	25
	3	10	17	24	31		7	14	21	28		5	12	19	26
	4	11	18	25		1	8	15	22	29		6	13	20	27
S M T W T F S	5	12	19	26		2	9	16	23	30		7	14	21	28
	6	13	20	27		3	10	17	24		1	8	15	22	29
	7	14	21	28		4	11	18	25		2	9	16	23	30
	8	15	22	29		5	12	19	26		3	10	17	24	31
	9	16	23	30		6	13	20	27		4	11	18	25	
	10	17	24	31		7	14	21	28		5	12	19	26	

POSTAL INFORMATION

LETTERS (Ordinary)

Inland	20 P.
For the first 15 Grams	15 P.
Every additional 15 Grams	10 P.
Postcard : Single	20 P.
Reply	15 P.
Inland Letter	
Book Pattern & Sample Packets	20 P.
Not exceeding 50 grams	
Every additional 25 Grams or fraction thereof	10 P.
Overseas (by sea)	80 P.
Not exceeding 20 Grams	1.43
Exceeding 20 gms. but not exceeding 50gms.	40 P.
Postcard (except Pakistan)All over world	
Overseas (by Air)	
Combined Postage com-Air surcharge for	
Pakistan	20 P.
Postcards	25 P.
Aerogrammes	
Overseas (Air)	
Per 10 Grams	Rs. 1.65
U. K. Europe and continent	75 P.
Postcard : Any Country	85 P.
Aerogrammes : Any Country	
America 10 Grams	Rs. 2.15

PARCELS (ORDINARY)

Inland

First 400 Grams

90 P.

Every additional 400 Grams

90 P.

Registration Fee— 95P. per Parcel

Overseas

Sea Mail	1 Kg.	3 Kgs.	5 Kgs	10 Kgs.
England	17.15	22.20	30.05	44.75
U.S.A.	12.50	21.50	33.25	58.95

PARCELS (AIR)

Inland

In addition to ordinary Postage there is a
Surcharge of 35 P. for every 200 Grams

TELEGRAMS

Inland (Ordinary)

Minimum 8 words

Re. 1.20

Every additional word

20 P.

Inland (Express)

Minimum 8 words

Rs. 2.40

Every additional word

20 P.

Overseas U.S.

Ordinary (Plain or card) Min 7 words

Re. 1.00

LT Minimum 22 words (50 P. a word)

Rs. 11.00

U. S. A.

Ordinary (Plain or card)

Re. 1.60

Minimum 7 words

Rs. 11.20

LT Minimum 22 words

17.60

Each additional word

80

LIST OF HOLIDAYS 1973

New Year Day	1st January
Lohari	13th January
Id-ul-Zuha	15th January
Republic Day	26th January
Muharram	5th February
Basant Panchami	7th February
Shiv Ratri	3rd March
Holi	18th March
Ram Naumi	11st April
Baisakhi	14th April
Mahavir Jayanti	15th April
Bank Holiday	30th June
Raksha Bandhan	13th August
Independence Day	15th August
Janam Ashtami	21st August
Gandhi Jayanti	2nd October
Dussehra	6th October
Dussehra	25th October
Dussehra	28th October
Id-ul-Fitr	10th November
Guru Nanak Birthday	25th December
X-Mas-day	31st December
Bank Holiday	

1 JANUARY 1973 MONDAY.

Saka 11 Paus 1894

सोमवार १ जनवरी पोष वदी १२

ॐ श्रीमहागणेशाय नमः

ॐ दशरथात्मजाय श्रीरामचन्द्राय नमः॥
ॐ नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्तधराय च॥
नमश्चरपुत्राय गणेशाय नमो नमः॥

अथ गणेशनामाष्टकस्तोत्रम् ॥

ॐ विद्याजित विघ्नहर्त्र विघ्ननाथकाय
हेरम्बाय गुहाग्रजाय लम्बोधराय नमः॥

ॐ श्री विष्णुरुवाच ॥

गणेशमेकदन्तं च हेरम्बं विघ्ननाथम्
लम्बोधरं पूषकं गजवचनगुहाग्रजम्॥
नामाष्टकं च पुत्रस्य शृणु मातुः प्रियम्
सिन्धुं सागरं सारभूतं सर्वविघ्नहर्त्र परम्॥
लोनांश्च वाचको गश्च गश्च निवाणवाचकः॥

2 JANUARY 1973 TUESDAY

Saka 12 Paus 1894

मंगलवार २ जनवरी पौष बदी १३

तयोरीयां परं ब्रह्म गणेषां प्रणामस्यहम् ॥ ३
एकप्राब्दः प्रधानार्थे दत्तश्च बलवाचकः।
बलं प्रधानं सर्वस्मादेकदत्तं नमाम्यहम् ॥ ४
दीनार्थवाचको हेश्च रम्बः पालकवाचकः।
परिपालकं दीनानां हेरम्बं प्रणामस्यहम् ॥ ५
विपत्तिवाचको विघ्नायकः खण्डनायकः।
विपत्तखण्डनकारकं नमामि विघ्ननायकम् ॥ ६
विष्णुदत्तेश्च नैवेद्ये यस्य लम्बोदरं पुरा।
विष्णुदत्तेश्च नैवेद्ये वेदे लम्बोदरं च तम् ॥ ७
पित्रा दत्तेश्च विविधैर्वेदे लम्बोदरं च तम् ॥ ८
धृष्टाकारो च यत्कर्णो विघ्नवारही कारणः।
सम्पदौ ज्ञानव्यपौ च धृष्टे कर्णे नमाम्यहम् ॥ ९
विष्णुप्रसादपुण्यं च यन्मार्गो सुनिश्चितम्।
तद् गजन्द्रवक्त्रं धृतं गजवक्त्रं नमाम्यहम् ॥ १०

3 JANUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 13 Paus 1894

बुधवार 3 जनवरी पीष नदी १४

यह स्यागे नृजातोऽयमाविभूतो हरालये ।
वन्दे शुहाग्रजं देवं एव देवाग्रपूजितम् ॥
एतन्नामाष्टकं दुर्गे नामाभि संयुतं परम् ॥
पुत्रस्य पश्य वेदं च तदो कार्यं तथा कुरु ॥
एतन्नामाष्टकं स्तोत्रं नानाध संयुतं शुभम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स सुखी सर्वतो जयः ॥
ततो विद्याः पलायन्ते न ते वा द्युधोरगाः ।
गणेश्वर प्रसादेन महत्तानी भवेदु वम् ॥
पुत्रार्थं लभते पुत्रं भायाथो विपुले स्त्रियम् ॥
महाजडः कर्णेन्द्रश्च विद्यार्वैश्व भवेत् पुत्रम् ॥
॥ इति श्रीगणेशस्तोत्रं समाप्तम् ॥
अथ गणेश कवचम् ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥

4 JANUARY 1973 THURSDAY

Saka 14 Paus 1894

गुरुवार ४ जनवरी पौष वदी अमावस

ॐ अस्य श्री संसारमोहनस्य गणेशाय
वक्ष्य प्रजापतिः ऋषिः, बृहती कुन्दः
श्री लम्बोदरः देवतः, धर्मार्थकाममोक्ष
विनियोगः ॥

ॐ श्री महागणेशाय नमः ॥

ॐ संसारमोहनस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिः बृहती देवो लम्बोदरः स्वयम्॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
सर्वेषां कवचानां वसारभूतमिदं मुने ॥
ॐ गं हूं श्रीगणेशाय स्वाहा मे पात मर्त्यकर्म
वा त्रिंशदक्षरो मंत्रो ललाटं मे सदा वलु॥
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीगणेशाय नमः सततं पात लोकनमः।
तल्लोकं पात विद्येशः सततं धारयौत हो ॥१॥

5 JANUARY 1973 FRIDAY

Saka 15 Paus 1894

शुक्रवार ५ जनवरी गौष सुनी १

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गौं मिति च सततं पातु नासिकाग्रा
ॐ गौं गं श्रूयैककीच स्वाहा पातु त्वधरं मम ॥५॥
दन्तानि तालुको जिह्वा पातु मे षोडशाक्षरः ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीं लम्बोदरायैति स्वाहा गण्डं सदावतु ॥
ॐ क्लीं ह्रीं विघ्नायैति स्वाहा कणं सदावतु ॥७॥
ॐ श्रीं गं गजाननायैति स्वाहा स्कन्धं सदावतु ॥
ॐ ह्रीं विनायकायैति स्वाहा पृष्ठं सदावतु ॥८॥
ॐ क्लीं ह्रीं मिति कङ्कालं पातु वक्षस्थलं च मम ॥
करी पादौ सदा पातु सर्वाङ्गं विघ्ना निघ्नकृतं ॥९॥
प्राच्यां लम्बोदरः पातु आग्नेयां विघ्नायैति ॥
दक्षिणे पातु विघ्नेशानैर्ऋत्यां तु गजाननः ॥
पश्चिमे पातु पुत्रो वायव्ये प्राकरात्मजः ॥
कृष्णास्यां प्राश्नोत्तरे व परिवर्णितमस्य च ॥१०॥

Saka 16 Paus 1894

गनिवार ६ जनवरी पौष सुदी २

हे प्राण्यमेकदन्तश्च हेरम्बः पातुं चोद्धतः ।
 अद्योगाधियः पातु सर्वपूज्यश्च सर्वतः ॥ १२ ॥
 स्वप्ने जागरणे चैव सातु संयोगितां शुक्रः ॥ १३ ॥
 इति ते कथितं वत्स सर्वमंत्राद्य विग्रहम् ॥ १३ ॥
 संसारमोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ १४ ॥
 श्रीकृष्णेन पुरा दत्तं गोलोके राममण्डले ।
 वृन्दावने विनीताय मह्यं दिनकरात्मज ॥ १५ ॥
 मया दत्तं च तभ्यं च यस्यै कस्मै न दास्यामि ।
 परं वरं सर्वपूज्यं सर्वसंकटतारकम् ॥ १६ ॥
 एरामभ्यर्च्य विधिवत् कवचं धारयेत्तु यः ।
 कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सौऽपि विष्णुर्न संप्राप्यः ॥
 अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयप्रातानि च ।
 गृहे न्य कवचस्यास्य कलां नानादिभिः पुरीषैः ॥
 ॥ १८ ॥

7 JANUARY 1973 SUNDAY

Saka 17 Paus 1894

रविवार ७ जनवरी पौष सुदी ३

इदं कवचमज्ञात्वा यो मजेच्छेत् किरात्मजम्॥
ज्ञातलक्ष्य प्रजप्त्वाऽपि न मंत्र सिद्धिदायकः॥१॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः
द्वति श्रीगणेशाय नमः सम्पूर्णः सायुधः
साङ्गः सपरिवारः सवाहनः प्रीयतां
॥ प्रीतोऽस्तु ॥॥

ॐ श्री कृष्णस्तोत्रम्॥

ॐ श्रीवत्सविभूषिताय श्रीनिधये परात्मने
परमब्रह्मपरात्मने श्रीकृष्णाय नमो नमः॥

ॐ अथ विष्णुमहेश्वराब्रह्माकृतश्रीकृष्ण-
स्तोत्रम्॥

8 JANUARY 1973 MONDAY

Saka 18 Paus 1894

सोमवार = जनवरी पौष सुदी ४

वरं, वरेष्ठं वरदं वराहं वरकारणम् ॥
कारणं कारणानां च कर्म तत्कर्मकारणम् ॥ १ ॥
तपस्तत्फलदं प्राश्वत तपस्विनां च तपसम् ॥
वन्दे नवघनप्रयामं स्वात्मारामं मनोहरम् ॥ २ ॥
निष्कामं कामरूपं च कामदं कामकारणम् ॥
सर्वसर्वेश्वरं सर्वबीजरूपं मनुजतमम् ॥ ३ ॥
वेदरूपं वेदबीजं वेदोक्तफलदं फलम् ॥
वेदज्ञं तद्विद्वान् च सर्ववेदविदां वरम् ॥ ४ ॥
इति श्रीविष्णुकृतस्तोत्रम् ॥ ॐ ॥

अथ शिवकृतस्तोत्रम् ॥ ६ ॥
ॐ जयस्वरूपं जयदं जयेशं जयकारणम् ॥
वरं जयदानां च वन्दे तं सपराजितम् ॥ १ ॥
विश्वं विश्वेश्वरेण च विश्वेशं विश्वकारणम् ॥

9 JANUARY 1973 TUESDAY

Saka 19 Paus 1894

मंगलवार ६ जनवरी पौष सुदी ५

विश्वाधारं च विश्वस्तं विश्वकारणकारणम् ॥२॥
विश्वरक्षाकारणं च विश्वघ्न विश्वजं परम् ॥
फलबीजं फलाधारं फलं च तत्फलप्रदम् ॥३॥
तेजः स्वयं तेजो दे सर्वतेजो ह्यनां वरम् ॥४॥

॥अथ ब्रह्माकृतस्तोत्रम्॥

ॐ कृष्णं वन्दे शुभातीतं गोविन्दमेकमक्षरम् ॥
अव्यक्तमव्ययं व्यक्तं गोपवेषाविद्यायिनम् ॥१॥
क्षिप्रोरवधसं शान्तगोपीकान्तं मनोहरम् ॥
नवीननीरदप्रयामं कोटिकन्दर्पसुन्दरम् ॥२॥
वृन्दावनवनाभ्यर्णं रासमण्डलसंस्थितम् ॥
रासेश्वरं रासवासं रासेल्लाससमुत्सुकम् ॥३॥

10 JANUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 20 Paus 1894

बुधवार १० जनवरी पौष सूदी ६

ॐ अथ ब्रह्माप्रांकर धर्मवृत्तविष्णुस्तोत्रम्

॥ ब्रह्मोवाच ॥

ॐ नमामि कमलाकान्तं शान्त सर्वदामन्युतम् ॥

वयं यस्य कलामेदाः कलाशकलया मुराः ॥१॥

मानवश्च सुनीन्द्राश्च मनुष्याश्च चराचराः ॥

कलाकलाप्राकलया धृतास्वत्तो निरञ्जन ॥२॥

॥ प्रांकर उवाच ॥

त्वमक्षयमक्षरं वा राममव्यक्लमीश्वरम् ॥

अनादिमादिमानन्दरूपिणं सर्वरूपिणम् ॥१॥

अणिमादिकसिद्धीनां कारणं सर्वकारणम् ॥

सिद्धिर्ज्ञ सिद्धिदं सिद्धिरप्यं कः स्तोतुमीश्वरः ॥२॥

॥ धर्म उवाच ॥

वेदे निरूपितं वस्तु वर्णनीयं विचक्षणैः ॥

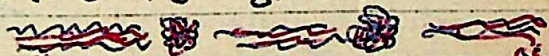
वेदे निर्वचनीयं यत्तन्निर्वक्तुं च कः क्षमः ॥१॥

11 JANUARY 1973 THURSDAY

Saka 21 Paus 1894

गुरुवार ११ जनवरी पौष सुदी ७

यस्य सम्भावनीय यत् पुणरुपनिर्जनम् ॥
तदतिरिक्तं स्तवने किमेहं सौमि निर्गुणम् ॥ २ ॥
ब्रह्मादीनामिदं स्तोत्रं षट् श्लोकां कं महामुने ॥
पाठित्वा मुच्यते दुर्गा द्वाद्धितं च लभेन्नरः ॥ ३ ॥



ॐ अथ नारायणकवचम् ॐ

ॐ श्रीमद्भात्मने परात्पराय परमब्रह्मणे
विश्वरूपकाय चराचरागोपाय विश्वेश्वराय
श्रीमन्नारायणाय नमो नमः ॥

ॐ ॐ ॐ श्री नारायणवर्मस्तोत्रमंत्रस्य
विश्वरूपं श्रीविशिष्टबलसुप्तं हृन्मसी
सवितारविग्रहः सायुधः सपार्श्वदे
नारायणो देवता ॐ बीजं स्वात्मर-
क्षापूर्वकं सम्यग् विजयसिद्धये

12 JANUARY 1973 FRIDAY

Saka 22 Paus 1894

गुरुवार १२ जनवरी पौष सुदी ६

श्री नारायण प्रीत्यर्थे नारायणकवचपाठे
(जपे वा) विनियोगः॥

अथ अङ्गन्यासः॥

ॐ ॐ नमः पादयोः, ॐ नं नमः जातुमोः, ॐ
मो नमः ऊर्वाः, ॐ तां नमः उदरे, ॐ रौ नमः
हृदि, ॐ ग्रं नमः पुरसि, ॐ णां नमः मुखे
ॐ यं नमः पिरसि॥

ॐ करन्यासः॥

ॐ ॐ नमः दक्षिणतर्जन्याम्, ॐ नं नमः
दक्षिणमध्यमायाम्, ॐ मो नमः दक्षिण-
नामिकायाम्, ॐ मं नमः दक्षिणकनि-
ष्ठायाम्, ॐ रौ नमः वामकनिष्ठायाम्,
ॐ वं वामनामिकायाम्, ॐ तं नमः
वाममध्यमायाम्,

13 JANUARY 1973 SATURDAY

Saka 23 Paus 1894

शनिवार १३ जनवरी पौष सुदी ६

ॐ वां नमः वाम तर्जन्याम् । ॐ हुं नमः
दक्षिण तर्जन्याम् । ॐ दें नमः दक्षि-
ण तर्जन्याम् । ॐ यं नमः वामाङ्गुष्ठ-
पर्वणि । ॐ यं नमः वामाङ्गुष्ठ-
पर्व-
णि ॥

अथ विष्णुपदक्षरन्यासः ॥

ॐ ॐ नमः हृदये । ॐ विं नमः मूर्धनि ।
ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये । ॐ णि नमः शिरसाय ।
ॐ वै नमः नेत्रयोः । ॐ नं नमः सर्वसंधिषु ।
ॐ मः अस्त्राय फट् प्रक्ष्याम् ।

॥ ॥ ॥ ॥ अग्रेट्याम् ॥

दक्षिणस्याम् ।

नैत्रहृदये ।

प्रतीच्याम् ।

14 JANUARY 1973 SUNDAY

Saka 24 Paus 1894

रविवार १४ जनवरी पौष सुदी १०

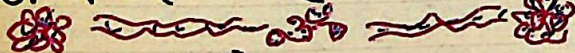
ॐ मः अस्त्राय फट् वायवे ।

उदीच्याम् ।

हेषान्याम् ।

ऊर्ध्वायाम् ।

ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम् ॥



॥राजो वाच ॥

यया पुष्टः सहस्राक्षः सवाहान् विपुसैनिकान्
क्रीडन्निवनिनिर्नित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥
भगवंस्तन्मयाख्यादि वर्म नारायणात्मकम् ।
यथाऽऽततायिनः प्रावृन् येन उपोऽजयन्मृधे ।

श्री शुक उवाच ॥

धृतः प्रदोहितस्तप्राप्तो महेंद्रायानुष्टुते ॥

15 JANUARY 1973 MONDAY

Saka 25 Paus 1894

सोमवार १५ जनवरी, पौष सुदी ११

नारायणारव्यं वमो ह तदिहै कमनाः शृणु ॥ ३ ॥

विश्वरूप एवाव ॥

श्रीतद्द्विपाणिशिरश्चम्य सपावित्रपदं मुखः ।
कृतस्वाङ्ग करन्यासो मन्त्राभ्यां वास्यतः श्रुचिः ॥ ४ ॥

नारायणमयं वमै हंन ह्येत् मय आगते ॥

पादयोर्जीनुनोरवैवीरुदरे हृदयधोरसि ॥ ५ ॥

मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत् ।

ॐ नमो नारायणायैति विपर्ययमथापि वा ॥ ६ ॥

करन्यासं ततः कुर्यात् द्वादशारक्षविद्यया ।

प्रणवादित्यकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ॥ ७ ॥

यस्य हृदयजोंकारं विकारमनुमूर्धनि ॥

षकारं तु भुवोर्मध्ये णकारं शिखयादिशेत् ॥

वेंकारं नेत्रयोर्दृष्ट्यान्तकारं सर्वसंधिषु ॥

16 JANUARY 1973 TUESDAY

Saka 26 Paus 1894

मंगलवार १६ जनवरी पौष सुदी १२

मकारमस्रमुदिप्रय मंत्रमूर्तिमवितबुद्धः॥१॥
सविहर्गं फडन्तं तत् सर्वदिशु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नमो हूति ॥१०॥
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मंत्रमुदाहरेत्॥११॥
ॐ हरिविदध्यात्मन सर्वरक्षां
न्यस्ताडु धिपद्मः पतगेन्द एष्टे ॥
दशरिचर्मसि गदेषु चापः
पाशान दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः॥
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
यौदोगणभ्यो वरुणस्य पाशात्॥
स्थलेषु मायावदु वामनोऽव्यात
त्रिविक्रमः श्वेदेतु विश्वरूपः॥१२॥

17 JANUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 27 Paus 1894

बुधवार १७ जनवरी पौष सुदी १३-१४

इर्गेष्वट व्याजि मुखादिषु प्रभुः
पाया नृसिंहोऽसुरयूथपारिः॥
विमुञ्चतो यस्य महादृष्टासं
दिशो विनेदुर्न्ययतंश्च गभीः॥२४॥
रक्षतसौ माद्वानि यन्नकल्पः
स्वदं प्रयोमनीतधरो वराहः॥
मोमेऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
लक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्॥२५॥
माकुग्रधर्मादखिलतात् प्रमादात्
नारायणः पातु नरश्च हासोत्॥
दत्तस्त्वयो गादश्च योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धीता
॥२६॥

18 JANUARY 1973 THURSDAY

Saka 28 Paus 1894

गुरुवार १८ जनवरी पौष पूर्णिमा

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवात्
हयशीर्षा मां पश्चिदैवहेलनात् ॥
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्
कुम्भो हरिर्मां निरयादृशेनात् ॥ १७ ॥
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपश्यत्
द्वन्द्वाद् मया दृष्टमे निर्जितात्मे ॥
यज्ञश्च लोकादवताज्जनानात्
बलो गणत्क्रोधवशादहीन्द्रे ॥ १८ ॥
द्वैपायनो भगवान् प्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमोदात्
कल्किः कलेः कालमलात्प्रपातु
धर्मावनायोः कृतावतारः ॥ १९ ॥

19 JANUARY 1973 FRIDAY

Saka 29 Paus 1894

शुक्रवार १६ जनवरी माघ बदी १

मं के प्रावो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्ग वमात्तवेष्टुः ॥
नारायणः प्रह्वउदात्तप्राक्कि
मैद्यं दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ २० ॥
देवोऽपराह्मे मधुहोग्रधन्वा
सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ॥
दोषे हृषीकेश उत्तरार्धरात्रे
निप्रीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ २१ ॥
श्रीवत्सधामा पररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनादतः ॥
दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥

20 JANUARY 1973 SATURDAY

Saka 30 Paus 1894

शनिवार २० जनवरी माघ बदी २

चक्रं युगान्तानन्तरि मनेमि

भ्रमत् समन्तात् भगवत्प्रयुक्तम्।
दंष्ट्रिश्च दंष्ट्रिधरि सैन्यमाशु

कथं यथा वातस्यैव हुताश्रयः॥२३॥

गदेऽश्वानि स्य प्रीति विस्फुलिङ्गे
निष्पिण्डि निष्पिण्डयजित प्रियासि॥

कृष्णाणु वैनायक यश्चरश्चो

भूतग्रहोऽर्चय चूर्णयारीन्॥२४॥

त्वं यातुद्यन् प्रमथ प्रेतमातृ -

विषाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।

दरीन्द्र(दरेन्द्र) विद्रावय कृष्णपूरितो

भीमस्वनाऽरेहदयानि कम्पयन्॥२५॥

21 JANUARY 1973 SUNDAY

Saka 1 Magh 1894

रविवार २१ जनवरी माघ बदी ३

तं तिग्मधारासि वरासि सैन्य -
मीषाप्रयुक्ता मम द्विन्दि द्विन्दि॥
चक्षुषि चर्मैश्च तचन्द्र हृदय
द्विषामद्यो नो हर पापचक्षुषासु॥ इदं॥
यन्नो मयं ग्रहेभ्योऽमृतकेतुभ्यो नृभ्य एव च॥
सुरीसुरेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो मृतेभ्योऽहोभ्य एव वा॥
सर्वेण्येतानि भगवन्नाम रूपासु कीर्तनात्॥
प्रयान्तु संशयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकोरव
गरुडो भगवन्स्तोत्रस्तोमश्च हृन्दो मयः प्रभुः॥
रक्ष त्वप्रोषकृच्छ्रेभ्यो विष्वसेनः स्वनामभिः॥
सर्वापद्भ्यो हरे नैम रूपायाना युधानि नः॥
बुद्धिद्विभनः प्रणान् पानु पार्श्वभूषणा॥ २०॥

22 JANUARY 1973 MONDAY

Saka 2 Magh 1894

सोमवार २२ जनवरी माघ बदी ४

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसन्न यत् ॥
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥३१॥
अथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्भूः
मृषायायुधालेङ्गाख्यायते प्राक्कीः स्वमायया ॥३२॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वतो भगवान् हरिः ।
पातु सर्वैः स्वल्पैर्नः सुदा सर्वत्र सर्वैः ॥३३॥
विदिधु दिधुद्वैमद्यः समन्ता-
दन्तबहिर्भगवान् नार सिंहः ॥
प्रहापयं लोकमयं स्वमेन
स्वतेजसा ग्रस्तं समस्ततेजाः ॥३४॥
मद्यवन्निदमाख्यातं बभूव नारायणात्मकम् ।
विजेयस्य भुक्ता येन दंशितो सुरयूथपातु ॥३५॥

23 JANUARY 1973 TUESDAY

Saka 3 Magh 1894

मंगलवार २३ जनवरी माघ बदी ५

एतद्धारयमाणस्तु ये ये पश्यति ब्रह्मणा ।
यदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ॥३६॥
नैकतश्चिद्वयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् ।
नाजदस्य ग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हि चेत् ॥३७॥
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः ।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स भरुद्यन्वति ॥३८॥
तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा ।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजभयः ॥३९॥
गगनान्यदतत सद्यः स विमाने ह्यवाकशिरः ।
स बालरिव ल्यवेचनादस्मीन्यादाय विस्मितः ॥
प्राप्य प्राचीं सरस्वत्यां स्नात्वा धामं स्वमन्त्रगात् ॥४०॥

25 JANUARY 1973 THURSDAY

Saka 5 Magh 1894

गुरुवार २५ जनवरी माघ वदी ७

ॐ ~~अथ रामरक्षास्तोत्रम्~~ ॐ
ॐ रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेद्यसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

ॐ श्रीरघुकुलतिलकाय रक्षःकुलविनाशकृते
सीताप्रियाय भरताग्रजे श्रीरामचन्द्राय
नेमो नमः ॥

ॐ चरितं रघुनाथस्य घातकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमधुरं पुष्पं महाघातकनाशनम् ॥ १ ॥
ध्यात्वा नीलोत्पलपञ्चमं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणौपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥ २ ॥
सासितूष्णघ्नं बुधोष्णपाणिं नक्तं वरान्तकम् ।
स्वलीलायोजनञ्च लोमाविर्मुक्तमजं विभुम् ॥ ३ ॥

26 JANUARY 1973 FRIDAY

Saka 6 Magh 1894

गुरुवार २६ जनवरी माघ बदी ८

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नी सर्वकामदम्बा
प्यारो मे राघवः पातु भालं दध्ना रथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृष्टौ पातु विश्वामित्रप्रियः धृती ॥
घ्याणं पातु मखत्राता सुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ॥
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नो प्राकाशकः ॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसौ नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥
सुग्रीवेष्टः कटी पातु सुक्थिनी हनुमत्प्रभुः ॥
जानुनी रेतुकृत्पातु जघे दप्रामुखानकः ॥८॥
अरु रघूत्तमः पातु रक्षः कुलविनाशकृत् ॥९॥
जानुनी रेतुकृत्पातु जघे दप्रामुखानकः ॥
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥१०॥

27 JANUARY 1973 SATURDAY

Saka 7 Magh 1894

शनिवार २७ जनवरी माघ बदी ६

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः पुत्री सुखी बिजयी विनयी भवेत् ॥१०॥
पतालभूतलव्योमचारणी पृच्छद्धारिणः ॥
न द्रष्टुमपि प्राकृते रचितं रामनामभिः ॥११॥
रामेति राममदिति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥
जगज्जैत्रैकमंत्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥
वज्रयैज्रनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताक्षः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥
आदिष्टवान्यथास्वप्ने स्वप्नरामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्याप्तः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥

28 JANUARY 1973 SUNDAY

Saka 8 Magh 1894

रविवार २८ जनवरी माघ वदी १०

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्ना
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥१६॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविष्णुलक्ष्मौ चैव कृष्णजिन्मम्बरौ ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दानौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
प्रावरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्ना
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥
आत्तसज्जुधनुषाविषुस्त्रयावक्ष्याम्यग-
निषङ्गसङ्गिनौ । रक्षणाय मम रामलक्ष्मण
वग्नतः पथि सद्वैव गच्छताम् ॥२०॥
सङ्गदः कवचीखड्गो चापबाणधरो युवा ॥
राक्षसनेत्राश्च रामः सावराक्षसः ॥२१॥

29 JANUARY 1973 MONDAY

Saka 9 Magh 1894

सोमवार २६ जनवरी माघ वदी ११

रामोदाधारधीः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥ २२ ॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ॥
जानकीवल्लभः श्रीमान् प्रेमेयपराक्रमः ॥ २३ ॥
इत्येतानि जपेन्नियं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधयुतं पुण्यं स प्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥

रामं दूर्वादलप्रयामं

पद्माक्षं पीतवाससम् ॥

स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यै -

न ते संसारिणो नराः ॥ २५ ॥

इति श्री रामरक्षास्तोत्रमयः कवचः साङ्गः
सायधः सवाहनः सपरिवारः प्रीयतां

धीतोः सु ॥

30 JANUARY 1973 TUESDAY

Saka 10 Magh 1894

मंगलवार ३० जनवरी माघ बदी ११

अथ धर्मसरस्वतीमहालक्ष्मीकृत

श्रीकृष्णस्तोत्रम् ॥

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ॥

प्रणतकेशानाथाय श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥

ॐ श्रीगोपेश्वराय गोपीनाथ गोवर्धनाय राधा-
प्रियाय गोवर्द्धनधराय गोपीजनप्रियाय
श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥३४॥

धर्म उवाच ॥

कृष्णं विष्णुं वासुदेवं परमात्मानमीश्वरम् ।

मेवित्यं परमानन्दमैकमक्षरमव्युतम् ॥१॥

गोपेश्वरं च गोपीप्रो गोपं गोवर्धकं विभुम् ।

गवामीपं च गोष्ठस्थं गोवत्सपुच्छधारिणम् ॥२॥

31 JANUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 11 Magh 1894

बुधवार ३१ जनवरी माघ वदी १२

गौगोपगौपीमध्यस्थं प्रधानं पुरुषोत्तमम् ।
वन्दे नवग्रहपुत्रं रासवासं मनोहरम् ॥३॥
इत्युच्चार्य समुत्तिष्ठन् रत्नकिंहासने वरे ।
ब्रह्मविष्णुमहेशास्तान् सम्भाष्य स उवाच ह ॥४॥
चतुर्विंशति नामानि धर्मैव क्रोद्धतानि च ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय स सुखी सर्वतो जयी ॥ ५ ॥
मृत्युकाले हरेर्नाम तस्य साध्यं भवेत् ध्रुवम् ।
स यात्यन्ते हरेः स्थानं हरिदास्यं लभेत् ध्रुवम् ॥६॥
नित्यं धर्मस्तं श्रुते नाधर्मं तद्वृत्तिर्भवेत् ।
चतुर्वर्गफलं तस्य प्राप्नुत कुरुते भवेत् ॥७॥
तं दृष्ट्वा सर्वपापानि पलायन्ते भयेन च ।
भयानि चैव दुःखानि वै न ते यमिवोरगाः ॥८॥

॥३॥ इति धर्मक्रतुस्तोत्रम् ॥ ॐ ॥

1 FEBRUARY 1973 THURSDAY

Saka 12 Magh 1894

गुरुवार १ फरवरी माघ बदी १३

॥ अथ सरस्वत्युवाच ॥

रासमण्डलमध्यस्थं रासोल्लाससंयुतसुकम् ।
रत्नसिंहासनस्थं च रत्नभूषणभूषितम् ॥ १ ॥
रासेश्वरं रासकरं वरं रासीश्वरीश्वरम् ।
रासाधिष्ठातृदेवं च कन्दे रासविनोदनम् ॥ २ ॥
रासायासपरिश्रान्तं रासरासविहारिणम् ।
रासोल्लसकानां गोपीनां कान्तं प्रान्तं मनोहरम् ॥ ३ ॥
प्रणम्य तमित्युक्त्वा प्रहृष्टवदनासती ।
उवाच सा एकामाच रत्नसिंहासने वरे ॥ ४ ॥
इति वाणीकृतं स्तोत्रं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
बुद्धिमान् पुत्रवान् सोऽपि विद्यावान् पुत्रवान् सदा

॥ इति सरस्वतीकृतं स्तोत्रम् ॥

2 FEBRUARY 1973 FRIDAY

Saka 13 Magh 1894

शुक्रवार २ फरवरी माघ बदी १४

अथ महालक्ष्म्यवाच ॥
सत्यखरूपं सत्येष्टं सत्यबीजं सनातनम् ॥
सत्याद्वारं च सत्यज्ञं सत्यमूलं नमाम्यहम् ॥१॥
(ॐ) इति शुभायास्तु ॥ सत्यं शिवं

सुन्दरम् ॥

ॐ ब्रह्माणं प्रति योगानि द्रयोपदिष्टं श्रीकृष्ण-
॥ कवचम् ॥

ॐ राधिकापतये रासेश्वराय वसुदेवात्मजाय श्री-
कृष्णाय नमो नमः ॥

ॐ योगनिद्रोवाच ॥ ॐ ॥

ॐ दूरीभूतं कुरु मयं मयं किं ते हरौ स्थिते ।
स्थितायामयि च ब्रह्मन्सुखं तिष्ठ जगत्पते ॥१॥
श्रीहरिः पातु ते वक्तुं मस्तु मे मधुसूदनः ॥

3 FEBRUARY 1973 SATURDAY

Saka 14 Magh 1894

शनिवार ३ फरवरी माघ अमावस

श्रीकृष्णश्चशुषीपातु नाहिकां रात्रिकापतिः॥२॥
कण्युग्मं च कण्ठं च कपालं पातु माधवः।

कपोलं पातु गोविन्दः केशाश्च केशवः स्वयम्॥३॥

अधरोष्ठं हृषीकेशो दनपंक्तिं गदाग्रजः॥

रासेश्वरश्च रसनां तालुकं वामनो विभुः॥४॥

वक्षः पातु सुकुन्दस्ते जठरं पातु दैत्यहा।

जनार्दनः पातु नाभिं पातु विष्णुश्च ते हनुम्॥५॥

नितम्बयुग्मं गुह्यं च पातु ते पुरुषोत्तमः।

जानुयुग्मं जानकीप्राः पातु ते सर्वदा विभुः॥६॥

हस्तयुग्मं नृसिंहश्च पातु सर्वत्र संकटे।

पादयुग्मं वराहश्च पातु ते कमलोद्भवः॥७॥

ऊर्ध्वं नारायणः पातु ह्यधस्तात् कमलापतिः॥

पूर्वस्यां पातु गोपालः पश्चिमौ दृष्ट्वा सह्या॥८॥

Saka 15 Magh 1894

रविवार ४ फरवरी माघ सुदी १

चनमाली पातु याम्या वैकुण्ठः पातु नैऋतौ ॥
 वारुण्यां वासुदेवश्च संतो रक्षाकरः स्वयम् ॥ १० ॥
 पातु ते सततमजो वायव्यां विष्टरश्चरः ।
 उत्तरे च सदा पातु तेजस्र जलजासनः ॥ १० ॥
 ह्येषां न्यामीश्वरः पातु सर्वत्र पातु शत्रुजित् ॥
 जले स्थिते वान्तरिक्षे निद्रायां पातु राघवः ॥ ११ ॥
 इत्येवं कथितं ब्रह्मन् कवचं परमाद्भुतम् ॥
 कृष्णेन कृपया दत्तं स्मृतेनैव पुरा मया ॥ १२ ॥
 शुम्भेन सह संग्रमे निर्लेक्ष्ये द्यौरदारुणे ॥
 गगणे स्थितया सद्यः प्राप्तिमात्रेण सो जितः ॥ १३ ॥
 कवचस्य प्रभावेण धरण्या पतितो मृतः ॥
 पूर्व वर्षे प्रातः खेच कृत्वा युद्धं मया बहुम् ॥ १४ ॥
 मृते शुम्भे च गोविन्दः कृपालुगगने स्थितः ॥

5 FEBRUARY 1973 MONDAY

Saka 16 Magh 1894

सोमवार ५ फरवरी माघ सुदी २

माल्यं च कवचं दत्त्वा गोलोकं स जगाम ह ॥१५॥
कल्यान्तरस्य वृत्तान्तं कृपया कथितं सुने ॥
अभ्यन्तरमयं नास्तिकवचस्य प्रभावतः ॥१६॥
कोटिप्राः कोटिप्रे नष्टा मया दृष्टाश्च वेद्यसः ।
अहं च हरिणा साध्यं कल्पे कल्पे स्थिरा सदा ॥१७॥
इत्युक्त्वा कवचं दत्त्वा सान्त्वर्यं चकार ह ।
निष्ठाङ्गे नामिकमले तस्थौ च कर्मलोद्भवः ॥१८॥
सुवर्णैरुटिकायां तु कृत्वेदं कवचं परम् ॥
कंठे वा दक्षिणे बाहौ बद्धीयाद्यः सुधी सदा ॥१९॥
विषाग्नि सर्प प्रात्रभ्यां भयं तस्य न विद्यते ॥
जले स्थले चान्तरिक्षे निद्रायामक्षतीश्वरः ॥२०॥
इति श्रीकृष्णकवचः सम्पूर्णः साङ्गः सायुधः
एपरिवारः सौहृदः प्रीयता प्रीतोऽस्तु ॥

6 FEBRUARY 1973 TUESDAY

Saka 17 Magh 1894

मंगलवार ६ फरवरी माघ सुदी ३

इति श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॐ शुभं भवतु ॥

॥ ॐ ॥

वन्दे नवद्यनप्रयागं स्वात्मारामं मनोहरम् ॥

॥ ॐ अथाच्युताष्टकम् ॥ ॐ ॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं
वासुदेवं हरिम् ॥ श्रीधरं माधवं गोपिकाव-

ल्लभं, जानकीनाथकं रामचन्द्रं भजे ॥ १ ॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधरं, माधवं श्रीधरं
राधिकासाधितम् ॥ इन्दिरा मन्दिरं चेतसा
सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दनं सुन्दरम् ॥ २ ॥

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने वक्रिणे, रुक्मिणी-
वाशिणे जानकीजानये ॥ वल्लवी वल्लभायार्च-

नायात्माने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥ ३ ॥

8 FEBRUARY 1973 THURSDAY

Saka 19 Magh 1894

गुरुवार ८ फरवरी माघ सुदी ५

कुञ्चितैः सुन्तलैर्भोजमानाननं, रत्नमौलिं
लसत्कुण्डलं गच्छतः। हारकेयूरकंकुण-
प्रोज्ज्वलं किङ्किणीमञ्जुलं प्रयामलं तं भजे ॥ ८ ॥
अव्युतस्याष्टकं यो पठेदसिद्धिं प्रेमतः प्रत्यहं
पुरुषः सम्पदम् ॥ धृतातः सुन्दरं कर्तुं विश्वम-
रसस्य वप्रयो हरि जायते सत्वरम् ॥ १५ ॥
इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतमव्युताष्टकं

॥ सम्पूर्णम् ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

9 FEBRUARY 1973 FRIDAY

Saka 20 Magh 1894

शुक्रवार ६ फरवरी माघ सुदी ६

ॐ अथ शिवस्तोत्रम् ॥ श्री अष्टोत्तमशय पार्वतीप्रणनाथाय
गिरिजाप्रियाय जगत्कल्याणकर्त्रे जगद्गुरवे
भस्माङ्गरागाय शिवाय नमो नमः ॥ ॐ ॥
ॐ शुक्रापीतपयोद मौक्षिजवावर्णी सुरैः
पञ्चभिस्त्र्यक्षैरंजितमीषा मिन्दुमुकुटं पूर्णन्दु-
कोटिप्रमम् ॥ शूलं टङ्क कृपाणवज्रदहनान्नागे-
न्दुघण्टां कुशान पाप्राभीतिहरं दद्यान्तममिता
कल्याज्वलं चित्तेयेत् ॥ १ ॥
वन्दे सिन्दूरवर्णं माणिमुकुटलसञ्चारवन्द्यावतं-
सं, भालोद्यनेत्रमीषां स्मितमुखकमलं दिव्यभूषा-
ङ्गरागम् । वयोऽन्यस्तपाणिरुत्तमं तन्मन्त्रं
स्याः प्रियायाः वृत्तान्तं तुङ्गस्तनाग्रे निहितकरतले

10 FEBRUARY 1973 SATURDAY

Saka 21 Magh 1894

गनिवार १० फरवरी माघ सुदी ७-८

वेदटङ्केष्टुहस्तम् ॥ २ ॥
चन्द्राकाशि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान-
स्थितं सुद्रापाप्राप्तुद्राक्षसूत्रविलसत्याग्निं
हिमांशुप्रभम् ॥ कोटीरेन्दुगलसुद्रासुततनुं
हारादिभूषणज्वलं कौस्तुभं विश्वविमोहनं
पद्मपतिं मृत्युञ्जयं भावये ॥ ३ ॥
हस्ताभ्यां कल्पद्रुयाभ्युत्तरतैराप्लावयन्तं
शिरो, द्वाभ्यां तो दधतं मृगाक्षवलये द्वा-
भ्यां वदन्तं परम् ॥ अंकन्यस्तकरद्वयामृत-
घटं कैलासकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजग-
नवेन्दुमुकुटभातं त्रिनेत्रं भजे ॥ ४ ॥
ध्यायेन्नित्यं महेश्वरं रजतगिरिनिभं चान्द-
नोवतारं, रत्नामलोज्ज्वलं इन्द्रं परशुम-

Saka 22 Magh 1894

रविवार ११ फरवरी माघ सुदी ६

वराभीतिहस्त प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्ता
 त्तुतमनरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् । विश्वा
 द्यं विश्वबीजं निखिलमयहरं पञ्चवक्त्रं
 त्रिनेत्रम् ॥ ५ ॥

मध्याह्नावसमप्रभं प्राप्तिधरं भीमाट्टहासेज्ज-
 लं, अश्रुं पद्मगमूषणं प्रि। विप्रिरवाप्रमश्रुत्प-
 रन्मूज्जजम् । हस्ताब्जैस्त्रिप्रि। खंससुन्दर-
 मसिं प्राक्किं दधानं विभुं वैष्णवीं चतुर्भु-
 खं पद्मपतिं दिव्यस्वरूपं भजे ॥ ६ ॥

चण्डेश्वरं रक्ततनुं त्रिनेत्रं रक्तांशुकाल्यं
 हृदिभावयामि ॥ टङ्कं त्रिशूलस्फटिका-
 क्षमालां कमण्डलुं बिम्बदिन्दुचूडम् ॥ ७ ॥

12 FEBRUARY 1973 MONDAY

Saka 23 Magh 1894

सोमवार १२ फरवरी माघ सुदी १०

नीलप्रवारुचिरं विलसत्त्रिनेत्रं, पाण्डुराकणौ -
तपलकपालशूलहस्तम् ॥ अङ्गाम्बिकेशम-
निपां प्रविमलमूर्धं बालेन्दुबद्धसुकुटं प्रण
मामि रक्षयम् ॥ ८ ॥

घण्टाकपालशृणिमुण्डकृपाणखेट-सुहृत्वाङ्ग-
शूलडमरुममयं दद्यानम् । रक्ताम्बुमिन्दुप्रा-
कलामरणं त्रिनेत्रं पञ्चाननाब्जमरुणांशुक-
मीशमीडे ॥ १० ॥

अर्धरेन्दुनिभं देवं सद्योजातं त्रिलोचनम् ॥
हरिठाक्षगुणामीतिवरहस्तं चतुर्मुखम् ॥ ११ ॥
बालेन्दुप्रोखरोल्लासिसुकुटं पश्चिमे यजेत् ॥ १२ ॥
हृदिस्थः सर्वभूतां विश्वरूपो महेश्वरः ॥

मङ्गलानामुक्तमार्थं दर्शनं च यथाश्रुतम् ॥ १३ ॥

13 FEBRUARY 1973 TUESDAY

Saka 24 Magh 1894

मंगलवार १३ फरवरी माघ सुदी ११

कैलासाचलसंनिभं त्रिनयनं पंचास्यमम्बायुतं
नीलग्रीवमह्नीशमूषठाक्षरं व्याघ्रत्वचा प्रावृ-
तम् ॥ अक्षस्रग् वरकुण्डिकाभयकरं चान्द्रीक-
लां विभ्रते गङ्गाम्भोविलसज्जुटं दशामुजं
वन्दे महेष्टं परम् ॥ १२ ॥

॥ ॐ ॥ इति शुभायास्तु ॥ ॐ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ

अथाष्टोत्तरशतनामात्मकं शिवस्तोत्रम् ॥

ॐ नमः शिवायः ॥

ॐ महादेवं विरूपाक्षं चन्द्राद्यैकतपोहरम् ॥

अमृतं प्राञ्जलं स्थानं नीलकण्ठं पिनाकिनम् ॥ १ ॥

वृषभाक्षं महाजैयं सुमुखं सर्वकामदम् ॥

कामाग्रे कामदहने कामरूपं कथयिष्ये ॥ २ ॥

14 FEBRUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 25 Magh 1894

बुधवार १४ फरवरी माघ सुदी १२

विरूपे गिरिप्रांभीमं हृत्किणं रक्तवाससम् ॥
योगिनं कालदहनं त्रिपुरघ्नं कपालिनम् ॥ ३ ॥
गूढव्रतं गुह्यमंत्रं गम्भीरं भावगोचरम् ॥
अणिमादिगुणाधारं त्रिलोकैश्वर्यनायकम् ॥ ४ ॥
वीरं वीरहृणं घोरं विरूपं मांसलं पृष्ठम् ॥
महामांसादमुन्मत्तं भैरवं वै महेश्वरम् ॥ ५ ॥
त्रैलोक्यद्रावणलुब्धं लुब्धकं यज्ञस्वदनम् ॥
कृतिकानां सुतैर्द्युक्ते मुन्मत्तं कृतिवाससम् ॥ ६ ॥
गजकृत्तिपरीधानं शुब्धं भुजगभूषणम् ॥
दत्तालम्बं च वेतालं घोरं प्राकिर्निपूजितम् ॥ ७ ॥
अघोरं घोरदैत्यघ्नं घोरघोषं वनस्यातिम् ॥
भस्माङ्गं जटिलं शुद्धं मेरुच्छिन्नात्सेवितम् ॥ ८ ॥
भूतेश्वरं भूतनाथं पञ्चभूताश्रितं खगम् ॥

15 FEBRUARY 1973 THURSDAY

Saka 26 Magh 1894

गुरुवार १५ फरवरी माघ सुदी १३

क्रोधितं निष्ठुरं चण्डं चण्डीयां चण्डिकाप्रियम् ॥
चण्डतुण्डं गरुत्मनं निम्बिंशं प्रावभोजनम् ॥
लेलिहानं महारौद्रं मृत्युं मृत्योरगोचरम् ॥ १० ॥
मृत्योर्मृत्युं महासेनं प्रभप्राप्तारण्यवासिनम् ॥
रागं विरागं रागान्धं वीतरागं प्रातार्चिषम् ॥ ११ ॥
सत्वं रजस्तमो धर्ममद्यमै वासवानुजम् ॥
सत्यत्वसत्यं सद्बुद्ध्यमसद्बुद्धमहेतुकम् ॥ १२ ॥
अधर्मानाश्वरं भानुं भानुकोटि प्रातप्रभम् ॥
यज्ञं यज्ञपातिं रुद्रमिष्टानं वरदं शिवम् ॥ १३ ॥
अष्टोत्तरप्रातं ह्येतन्मूर्तीनां परमात्मनः ॥
शिवस्य दानवोऽध्यायन्मुक्तास्तस्मान्महामयात् ॥

॥ १४ ॥

इति शिवस्तोत्रः साङ्गः श्रीशिवस्तोत्रः शिवाय

॥ ॐ ॥

20 FEBRUARY 1973 TUESDAY

Saka 1 Phagun 1894

मंगलवार २० फरवरी फाल्गुन बदी ३

अथ शिवकवचम् ॥

ॐ कर्ष्वरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्र
हारम् । सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी-
सहितं नमामि ॥

ॐ श्रीशिवाय, अमोघाय, शिवकवचाय, परम-
गुह्याय, अथादरणीयाय, सर्वपापहर्त्रे, सर्व-
पापमङ्गलविघ्नबाधाहर्त्रे, परमपवित्राय,
जयप्रदाय, सम्पूर्णविपत्तिविनाशकाय,
सम्पूर्णसम्पदायकाय, श्रीशंकराय, पार्व-
तीप्राणनाथाय नमो नमः ॥

ॐ अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमंत्रस्य, ब्रह्मा-
न्त्रमिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीसदाशिव
देवताः, ह्रीं प्राक्, वं कीलकम्,

21 FEBRUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 2 Phagun 1894

बुधवार २१ फरवरी फाल्गुन वदी ४

श्री ह्रीं क्लीं बीजम्, आत्मनो वाक् मनो
कायो पाजितपाप निवारणार्थं, आत्मनः
अभीष्टकामनासिद्धयर्थं, सर्वरोगाविष्ट-
निवारणार्थं श्री सदाशिवश्रुतोषप्रकर-
प्रीत्यर्थं शिवकवचस्तोत्रपाठे (जपे)
विनियोगः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

अथ करन्यासः ॥

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वाला मालिने ॐ ह्रीं रां
सर्वप्राप्तिधाम्ने ईशानात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥
ॐ नमो भगवते ज्वलज्वाला मालिने ॐ नं वीं
नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां नमः ॥
ॐ नमो भगवते ज्वलज्वाला मालिने मं रं दं अना-

22 FEBRUARY 1973 THURSDAY

Saka 3 Phagun 1894

गुरुवार २२ फरवरी फाल्गुन बदी ५

दि प्राक्कि धाम्ने अघोरा त्मने मध्यमाभ्यां वषट्
ओं नमो भगवते ज्वलज्वाला मालिने ॐ शिं रै
स्वतंत्र प्राक्कि धाम्ने वामदेवा त्मने अनामिकाभ्यां
हुम् ॐ नमो भगवते ज्वलज्वाला मालिने ॐ
वां रै अलुप्त प्राक्कि धाम्ने सद्या जाता त्मने
फनिष्टिकाभ्यां वौषट् । ॐ नमो भगवते
ज्वलज्वाला मालिने ॐ ये रः अनादि प्राक्कि-
धाम्ने सर्वा त्मने कर लल कर पृष्ठाभ्यां फट् ॥

अथ हृदयाद्यङ्गन्यासः ॥

ओं नमो भगवते ज्वलज्वाला मालिने ॐ ह्रीं रां
सर्व प्राक्कि धाम्ने दृष्टा ना त्मने हृदयाय
नमः । ॐ नमो भगवते ज्वलज्वाला मा-
लिने ॐ नं रीं नित्य लुपि धाम्ने तस्य-

23 FEBRUARY 1973 FRIDAY

Saka 4 Phagun 1894

शुक्रवार २३ फरवरी फाल्गुन वदी ६

वात्मने शिरसि स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते
ज्वलज्वालामालिने ॐ मं रं अनादिप्राक्
धाम्ने अघोरात्मने शिरवायै वषट् ॥
ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ
प्रां रं स्वतंत्रप्राक्किधाम्ने वामदेवात्मने
कवचाय हुम् ॥ ॐ नमो भगवते ज्वलज्
ज्वालामालिने वां रं अलुप्तप्राक्किधाम्ना
त्मने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ
यं रं अनादिप्राक्किधाम्ने सर्वात्मने
अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् ॥

24 FEBRUARY 1973 SATURDAY

Saka 5 Phagun 1894

सनिवार २४ फरवरी फाल्गुन बदी ७

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं
जगन्नाथनाथं सदानन्दमात्मन् ॥

भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं

१ प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं ॥ १५

गले रुडुमालं तनो हृदयजालं, महाकालकाल
गणेशादिपालम् । जटाजूटगङ्गातरङ्गैर्विप्रांलं
प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं ॥ २॥

सुदामाकलं मण्डलं मण्डयन्तं, महा मण्डलं

भस्मभूषाधरन्तम् । ३५ नादिं धूपारं महामो-

हविहारं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं ॥ ३॥

तटाद्यो निवासं महाद्वादहासं, महापापना-

शं सदा स्वप्रकाशम् । गणेशं गिरीशं सुरेशं

महेश्वरम्, प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं प्रीतिं ॥ ४॥

25 FEBRUARY 1973 SUNDAY

Saka 6 Phagun 1894 ॐ ति

रविवार २५ फरवरी फाल्गुन बही ८

गिरौ न्द्रात्मजासंप्रहीतार्थदेहं गिरौ संस्थितं
हं विद्युत्सोहम् ॥ परमब्रह्मब्रह्मादिभिर्विद्यमानं
शिवं प्राकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५ ॥

कपाले त्रिशूलं कराम्बां दधानं पदाम्भोजनम्रायकामं
दधानम् ॥ बलिवर्धयानं सुराणां प्रधानम्, शिवं
प्राकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ६ ॥

प्रारब्धद्वन्द्वगतं गुणघनं दधानं त्रिनेत्रं पावेत्रं
धनेशस्य मित्रम् ॥ अपूर्णकलजं चरित्रं
विवित्रं शिवं प्राकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ७ ॥

हरं सप्रहारं चित्ताम्बुविहारं भजे वेदसारं
सदा निर्विकारम् ॥ प्रमृष्टाने वसन्तं
मनोज्ञं बहन्तं शिवं प्राकरं शम्भु-

26 FEBRUARY 1973 MONDAY

Saka 7 Phagun 1894

सोमवार २६ फरवरी फाल्गुन बदी ६

मीशानमी ड्ये ॥ ८ ॥

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणेः पठेत्
सर्वदामर्गमा वा नरकः । स पुत्र धनं
धान्यमित्रकूलजं विविजं समासाध्य
मोक्षं प्रयाति ॥ १ ॥ ॐ ॐ ॐ

॥ इति श्रीशिवस्तोत्राष्टकम् ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठं मरिन्दमम् ॥
सहस्रकरमत्युग्रं वन्दे प्राम्भुमुमापतिम् ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

अथापरे सर्वपुराण गुह्य निषेधपापैघहरं
पवित्रम् ॥ जयप्रदं सर्वविषादिमोचनं वक्ष्यामि
धौवे कवचं हिताय ते ॥

27 FEBRUARY 1973 TUESDAY

Saka 8 Phagun 1894

मंगलवार २७ फरवरी फाल्गुन बदी १०

नमः कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्॥
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥१॥
सुखे देहो समासीनो यथावत्कल्पितासनः॥
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चित्तये स्थितमयधाम॥२॥
हृत्पण्डरीकन्तरसंनिविष्टस्वर्तजसा व्याप्त-
मोऽवकाशम्। अतीन्द्रियं सुदृढमनस्तमाद्यं
ध्यायेत्परानन्दमयं महेश्वरम्॥३॥
ध्यानावधूतारिखिलकर्मबन्धश्चिरं विद्यानन्द-
निमग्नचेताः। षडक्षरन्याससमाहितात्मापूवे-
न कुर्यात्कवचेन रक्षाम्॥४॥
मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे
प्रतिष्ठं गंभीरे॥ तन्नाम दिव्यं वरमन्नामूलं
धनोत्तमं सर्वमयं हृदि रक्षाम्॥५॥

28 FEBRUARY 1973 WEDNESDAY

Saka 9 Phagun 1894

बुधवार २८ फरवरी फाल्गुन बदी ११

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्द
घनचिदात्मा ॥ अठोरणीयानुप्राकिरेकः
स ईश्वरः पातु मयादुष्टोपात ॥ ६ ॥
यो मुखरूपेण विभर्ति विश्वं पोयात्स मृमे-
मिरिचोऽष्टमूर्तिः ॥ योऽपां स्वरूपेण नृणां क-
रोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥ ७ ॥
कल्पावसने भुवनानि दग्ध्वा, सर्वाणि यो नृत्याति
भूरिलीलः ॥ स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्या-
दिभीतेरिव लान्छतायात् ॥ ८ ॥
प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो, विद्यावरा-
भीतिकुठारवाणिः ॥ चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिने-
त्रः ॥ प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम् ॥ ९ ॥
कुठारवेदोऽङ्गुलीपाशभूल, कपाहट्टक्री-

1 MARCH 1973 THURSDAY

Saka 10 Phagun 1894

गुरुवार १ मार्च फाल्गुन बदी १२

क्षमणान् दधानः। चतुर्मुखो नीलसचि-
स्त्रिनेत्रः पायादधोरो दिशि दक्षिण-
स्याम् ॥ १० ॥

कुन्देन्दुपाङ्कटिकावभासो, वेदाक्षमाला
वरदामयाङ्गः। अक्षभृतवक्त्रः प्रभावः,
सद्योऽधिजातोऽवतु मं प्रतीच्याम् ॥ ११ ॥
वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः, सरोजकेतु-
त्केसमानवर्णः। त्रिलोचनश्चाक्षचतुर्मुखो
मा पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥ १२ ॥
वेदामयेष्टाङ्कपाटङ्कपाशः, कपालदक्काक्षक-
भूलपाणिः। शितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा-
मीपान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥ १३ ॥
मूर्धन्यमन्त्रानाम चन्द्रमौलि-माला-मन्त्रा-

2 MARCH 1973 FRIDAY

Saka 11 Phagun 1894

शुक्रवार २ मार्च फाल्गुन वदी १३

आदध भालनेत्रः । नेत्रे ममाव्यादगनेत्र-
हारी नासं सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥ १४ ॥
पायाव्युत्ती मे भुतिगीतकीर्तिः, कपोल-
मव्यात् हततं कपाली ॥ वक्त्रं सदा रक्षतु
पंचवक्त्रे, जिह्वा सदा रक्षतु वेद-
जिह्वः ॥ १५ ॥

कण्ठं गिरौषोऽ वतु नीलकण्ठः, पाणि-
द्वयं पातु पिनाकपाणिः ॥ दोर्मूलम-
व्यान्मम धर्मबाहु, वक्षः स्थलं दक्षमखा-
नकोऽ व्यात् ॥ १६ ॥

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा, मध्यं
ममाव्यान्मदनान्तकरी ॥ हेरम्बताला
मम पातु नाभिं, पायात्कटीधूर्ज-
टिरीश्वरी मे ॥ १७ ॥

3 MARCH 1973 SATURDAY

Saka 12 Phagun 1894

गनिवार ३ मार्च फाल्गुन बदी १४

ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो, जानुद्वयं मे
जगदीश्वरोऽव्यात् ॥ जङ्घा युगं पुंगव-
केतुरव्यात्, पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्य-
पादः ॥ १८ ॥

महेश्वरः पातु दिनादियामे, मां मध्ययामे ॥
वतु वामदेवः ॥ त्रियम्बकः पातु तृतीय-
यामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे ॥

प्राथानिष्ठादौ प्राणिप्रोखरो मां
गङ्गाधरो रक्षतु मां निष्पीथे ॥ गौरीपातिः
पातु निशावसाने ॥ मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्व
कालम् ॥ १९ ॥

अन्तः स्थितं रक्षतु प्राङ्करो मां स्था-
णुः सदा पातु बहिः स्थितं मां ॥

4 MARCH 1973 SUNDAY

Saka 13 Phagun 1894

रविवार ४ मार्च फाल्गुन अमावस

तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो
रक्षतु मां समन्तात् ॥ २१ ॥

तिष्ठन्तमव्याधुवनैकनाथः पायात्
व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः ॥ वेदन्तवे-
द्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु
शिवः प्रायानम् ॥ २२ ॥

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः, शैलादि-
दुर्गेषु पुरत्रयारिः ॥ अरव्यवासादि
महामुखाय । पायान्मृगव्याधिरुदार
शक्तिः ॥ २३ ॥

कल्पान्तकादोपपदुप्रकोपः स्फुटार-
दटहासाञ्जलिताण्डकोशः ॥

5 MARCH 1973 MONDAY

Saka 14 Phagun 1894

सोमवार ५ माघ फाल्गुन सुदी १

धोत्रारिसेनाणिवदुर्निवार महामया-
द रक्षतु वीरभद्रः ॥ २४ ॥
पत्यश्वमातङ्ग घटावरुध, सहस्रल-
क्षायुतकोटिभीषणम् ॥ अक्षोहिणीनां
प्रातमाततायिनां किन्द्यानृडोघो-
रुकठारधारया ॥ २५ ॥

निहन्तु दस्युन् प्रलयानलार्चिः-
ज्वलन् त्रिशूल त्रिपुरान्तकस्य ॥
प्राद्वल सिंहशंखकादि हिंस्रान
संवासयत्वा प्राधनुः पिनाकम् ॥ २६ ॥
उः स्वप्रदुष्पाकुनडुर्गतिदोर्मनस्य
उर्मिश्च उड्यसुनडुस्सहस्रप्रान्तिम् ॥

6 MARCH 1973 TUESDAY

Saka 15 Phagun 1894

मंगलवार ६ माचं फाल्गुन सुदी २

उत्पाततापविषभीतिमसद्बहर्ति-
याद्योश्च नाप्रायतु मे जगताम-
धीप्राः॥२०॥

॥ॐ नमः शिवाय ॐ॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलत-
त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय
सकललोकैककत्रै सकललोकैकमत्रै
सकललोकैकहत्रै सकललोकैकगुरवे
सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगम-
गुह्याय सकलजगदभयकराय, सकल-
लोकैकप्रकाशाय साक्षाद्-प्रखराय
चन्द्रचूडाय ॥ श्रुतनिजाभासाय, नि-
र्गुणाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय

7 MARCH 1973 WEDNESDAY

Saka 16 Phagun 1894

बुधवार ७ मार्च फाल्गुन सुदी ३

निर्विन्द्याय निस्सङ्गाय निर्मलाय
निर्गमाय नित्यरूपविभवाय, निरु-
पमविभवाय निराधाराय नित्यशु-
द्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दद्वयाय ॥
परमप्रान्तप्रकाशतेजोरूपाय

॥ जय जय ॥ ॥ ॐ ॥

महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदा
वदारण महामैरव कालमैरव कल्पा-
न्तमैरव कपालमालाधर खड्गवाङ्मुख
चर्मपाशाङ्क प्राङ्मुख शूलचोपबाण
गदाप्राक्षिभिन्दिपाल तोमरमुसल
सुहर पादुका परशु पारिचमसु-
खी प्रान्तर्वा चक्राद्याद्यधर्मप्रणकर

16 MARCH 1973 FRIDAY

Saka 25 Phagun 1894

शुक्रवार १६ मार्च फाल्गुन सुदी १२-१३

हहसमुख दंष्ट्राकराल विकटादहास-
विस्फारितब्रह्माण्डमण्डल नागेन्द्रकु-
ण्डल, नागेन्द्रहार, नागेन्द्रवलय, नागे-
न्द्रसर्माधार, सत्यंजय, यम्बक, त्रिपु-
रान्तक, विरूपाक्ष, विश्वेश्वर, विश्वरूप
पृथग्भवान्न, विषभूषण, विश्वतोमुख,
सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महासू-
भयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभय-
सुखादाय उत्सादय विषसर्पभयं शत्रुभय
शत्रुभय चोरभयं मारय मारय मम शत्रु
नृणां हारय हारय शूलैर्न विदारय
विदारय कठारेण भिन्धि भिन्धि
खड्गेन नृणां भिन्धि भिन्धि खड्गेन

17 MARCH 1973 SATURDAY

Saka 26 Phagun 1894

शनिवार १७ मार्च फाल्गुन सुदी १४

एवद्वाङ्मे न विप्रोथय विप्रोथय सुस-
लेन निष्पेक्षय निष्पेक्षय बाणैः
संताडय संताडय रक्षांसि भीषय
भीषय भूतानि विद्रावय विद्राव-
य कृष्णमाण्डवेताल मारीगण बहिरा-
क्षसान् संत्रासय संत्रासय मममयं
कुक्कुटं कुक्कुटं वित्रस्तं मामश्वासयश्वासय
नरकभयान्मासुद्धारय उद्धारय संजी-
वय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामप्याय-
याप्यायय दुःखानुबन्धमानन्दय
आनन्दय शिवकवचेन मामाब्ध-
दयाब्धय नमस्कृत्य स्वाशिव
नमस्त नमस्त नमस्त ॐ ॥

8 MARCH 1973 THURSDAY

Saka 17 Phagun 1894

गुरुवार ८ मार्च फाल्गुन सुदी ४

॥ मृषम एवात्र ॥

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया॥
तत्रोवाद्या प्रशमनं रुहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥२५॥
यः सदा धारयेन्नम्यः प्रौवं कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं प्रमोहानुग्रहात् ॥२६॥
क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा॥
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमप्युश्रुविन्दति ॥२७॥
सर्वद्वारिद्रशमनं सौमङ्गल्यं विवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥ ३१॥
महापातकसंघातैर्मुच्यते वोपपातकैः॥
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववमानुभावतः ॥३२॥
त्वमपि श्रद्धया कस्य प्रौवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो दुवपुयात् ॥

॥ ३३ ॥


9 MARCH 1973 FRIDAY

Saka 18 Phagun 1894

शुक्रवार ६ मार्च फाल्गुन सुदी ५

इति श्रीस्कन्धमहापुराणेष्काशीतिसाह-
स्या नृतीये ब्रह्मेत्तरखण्डे सीमन्तिनी-
महात्म्ये भद्रायुषोपरव्याने शिवकव-
चनाम द्वादशसर्गः सम्पूर्णः प्रीयतां

॥ प्रीतोऽस्तु ॥

२२०३  १२
२२

14 MARCH 1973 WEDNESDAY.

Saka 23 Phagun 1894

बुधवार १४ मार्च फाल्गुन सुदी १०

॥ ॐ अथ श्रीमहामृत्युंजयकवचम् ॥

ॐ श्री पार्वतीपतये दक्षयज्ञविनाशनाय चन्द्रप्रोख-
राय नीलकण्ठाय शंकराय ईश्वराय महामृत्युंज-
याय श्रीशिवाय नमो नमः ॥ ॐ शुभम् ॥ ॐ ॥

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयकवचस्य ब्रह्मात्र-
भिः अनुष्ठुप् छन्दः श्रीपार्वतीपतिर्मृत्युं
जयो देवतादेवारेण्यबलायुस्वास्थ्यप्राप्ति
वर्धनाय पोठ विनियोगः ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

ॐ श्री देवी उवाच ॥

ॐ भगवन् सर्वधर्मज्ञ सृष्टिस्थितिलयात्मक ॥
मृत्युंजयस्य देवस्य कवचं मे प्रकाशय ॥ १ ॥

ॐ श्री ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि मन्त्रं कवचं सर्वसिद्धिदम् ॥

15 MARCH 1973 THURSDAY

Saka 24 Phagun 1894

गुरुवार १५ मार्च फाल्गुन सुदी ११

मा कहेडुयोऽपि यद्गुत्वाचिरं जीवी व्यजायत ॥ २ ॥
तथैव सर्वदिक्पाला उभिरत्नमवाप्नुयुः ॥
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा ब्रह्मोऽनुष्टुबुदाहृतम् ॥ ३ ॥
हृत्संजय! हृत्सुदिष्टा देवता पार्वतीपतिः ॥
देहारोम्यल्ललायुष्टे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥
ॐ त्र्यम्बकं मे शिरः पातु ललाटे मे यजामहे ।
सुगन्धिं पातु हृदये जगते पुष्टिं वर्धते ॥ ५ ॥
नाभिसुवोक्कमिव पातु मां पार्वतीपतिः ॥
बन्धनाद्वरुणममिव पातु कामाङ्गु शालतः ॥ ६ ॥
मृत्योर्जनुयुगं पातु दक्षयज्ञविनाशनः ॥
जङ्गाद्युगं वसुक्षीय पातु मां चन्द्रप्रोखरः ॥ ७ ॥
मातृताञ्च पद द्वन्द्वं पातु सर्वेश्वरो हरः ॥
अंशो मे श्रीशिवः पातु मालिक ४३ पार्श्वयोः ॥ ८ ॥

18 MARCH 1973 SUNDAY

Saka 27 Phagun 1894

रविवार १८ मार्च फाल्गुन पूर्णिमा

ऊर्ध्वमेव सदा पातु रोमहर्ष्याग्निलोचनः॥
अधः पातु सदाशम्भुः सर्वपापनिवारणः॥१५॥
वामदेवार्धनाभो वायव्यं पातु शंकरः॥
कपर्दी पातु कौवेर्यमैशान्या ईश्वरेऽवतु॥१०॥
ईशानः हलिलेपायादघोरः पातु कानने॥
अंतरिक्षे वामदेवः पायात्तत्पुरुषोक्षुवि॥११॥
श्रीकंठः शयने पातु भोजने नीललोहितः॥
गमने अम्बकः पातु सर्वकार्येषु सुव्रतः॥१२॥
सर्वत्र सर्वदेहं मे सदा मृत्युञ्जयाऽवतु॥
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्॥१३॥
सर्वरक्षाकरं सर्वं ग्रहपीडा निवारणम्॥
दुःखघ्ननाशनं पुण्यमायुरारोग्यदायकम्॥१४॥
त्रिसुन्दरं यः सते देवतस्य सत्यं न विद्यते॥

19 MARCH 1973 MONDAY

Saka 28 Phagun 1894

सोमवार १६ मार्च चैत्र वदी १

लिखितं मूर्जपत्रे तु य इदं मे वाधारयेत् ॥ १५ ॥
तं दृष्ट्वैव पलाययेन्न भूतप्रेतविशाचकाः ॥
डाकिन्यश्चैव योगिन्यः सिद्धमन्त्रविराक्षताः ॥ १६ ॥
बालप्रहादिदोषाहि नश्यन्ति तस्य दृष्टीनात् ॥
उपप्रहाश्चैव मारी मयं चौराभिचारिणः ॥ १७ ॥
इदं कवचमायुष्यं कथितं तव सुन्दरि ॥
न दातव्यं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कदाचन ॥ १८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं महासृजं जय कल्पे देवीश्वर-
संवादे महासृजं जय कवचः सम्पूर्णः
साङ्गः सपरिवारः सवाहनः सायुधः
प्रीयतां प्रीतोऽस्तु ॥

॥ अमर ॥ ॐ

10 MARCH 1973 SATURDAY

Saka 19 Phagun 1894

शनिवार १० मार्च फाल्गुन सूदी ६

ॐ अथ श्रीसूर्यकवचम् ॥ १ ॥

ॐ नमः श्री मास्कराय दिवाकराय
प्रभाकरायामिततेजसे सहस्ररश्मये
सूर्याय नमो नमः ॥

ॐ ऽदुत्यं जातवेदसं देव वहन्ति केतवः ।

दृष्टो विश्वाय सूर्यम् ॥ २ ॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुर्दितानि परासुव ।

यद्मद्वन्तु आसुव ॥ २ ॥

ॐ आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम मास्करा ।

दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

ॐ नमो मित्राय भानवे सूर्यो मीमाहि ।

भाजिष्ठावे विश्वहेतवे नमः ॥ ४ ॥

सूर्यात् भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानि तु ॥

सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति यः सूर्यः सऽहमेव च ॥

॥ ५ ॥

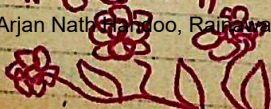
11 MARCH 1973 SUNDAY

Saka 20 Phagun 1894

रविवार ११ मार्च फाल्गुन सुदी ७

ॐ नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे, जगत्सृ-
ति स्थितिना प्राद्वेतवे। त्रयमिमांशं त्रिगु-
णात्मधारिणे, विराञ्चिनारायणप्राङ्कुरा-
त्मने ॥ ६ ॥ यस्योदयेनेह जगत् प्रबु-
ध्यते, प्रवर्तते चाखिलकर्मसिद्धये ॥
ब्रह्मेन्द्रनारायणरुद्रवन्दितः, स नः
सदा यच्छतमङ्गुलरविः ॥ ७ ॥
ॐ त्रिं देवानामुदगादनीकं चक्षुमि-
त्रस्य वरुणस्याग्रेः। आप्राद्यावा
पृथिवी अन्तरिक्षं, सूर्य आत्मा
जगत्स्तस्थुषश्च ॥ ८ ॥

॥ ॐ ॥



20 MARCH 1973 TUESDAY

Saka 29 Phagun 1894

गंगलवार २० मार्च चैत्र बदी २

ॐ अथ सूर्यकवचम् ॥

ॐ श्री दिवाकराय, अमृततेजसे, सर्वरोग
हराय, सर्वदेवनमस्कृताय, प्रभाकराय,
भास्कराय मातेण्डाय श्री सूर्याय नमः ॥

ॐ श्री बृहस्पतिकवचम् ॥

ॐ अस्य श्रीजगद्धितक्षत्रस्य सूर्यकवच-
स्य प्रजापतिः शृषिः गायत्रीच्छन्दः
दिनकरो देवतायाधिप्रणाप्राणे
सौन्दर्ये व विनियोगः ॥

ॐ इन्द्र शृणु प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ॥
यद् धृत्वा मुनयः पृता जीवन्मुक्ताश्च भारतम् ॥
कवचं विभक्त्याधि नै याति सन्निधिं भियः ॥
यथा दृष्ट्वा वै न तं यं पलायन्ते मुजङ्गमाः ॥ २ ॥

21 MARCH 1973 WEDNESDAY

Saka 30 Phagun 1894

बुधवार २१ मार्च चैत्र बदी ३

शुद्धाय शुक्लमाय स्वाध्याय प्रकाशयेत् ॥
खलाय पराध्याय दत्वा मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥
जगत्त्रिलक्षणस्यास्य कर्तव्यं प्रजापतिः ॥
ऋषिप्रहृष्टन्दश्च गायत्रीदेवो दिनकरः स्तुतम् ॥
व्याधिप्रणाशो सौन्दर्यं विनियोगः प्रकाशितः ॥
सद्यो रोगहरं सारं तव पापप्रणाशनम् ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं सूर्याय स्वाहा मे पातु मस्तकम् ॥
अष्टादशारक्षो मे तूः कपातं मे सदा वतु ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं सुखाय स्वाहा मे पातु नासिकाया ॥
चक्षु मे पातु स्वयंश्च तारकां च विकर्तनः ॥
भास्करो मे धरं पातु दन्तादितकरः सदा ॥ १॥
प्रचण्डः पातु गण्डं मे मार्तण्डः कर्णमेव च ॥
मिहिरश्च सदा स्कन्दो पूजाजङ्घे सदा वतु ॥

22 MARCH 1973 THURSDAY

Saka 1 Chait 1895

गुरुवार २२ मार्च चैत्र वदी ४

वक्षः पातु रविः प्राश्वन्नामिं स्वर्गः स्वर्गसदा
कुङ्कुलं मे सदा पातु सर्वदेवनमस्कृतः॥ १५॥
करो पातु सदा ब्रह्मः पातु पादौ प्रभाकरः॥
विभाकरो मे सर्वौङ्ग पातु सततमौश्वरः॥ १६॥
इति ते कथितं वत्स कवचं सुमनोहरम्॥
जगद्दिलक्षणं नाम त्रिजगत्सु सुदुलभम्॥ १७॥
पुरा दत्तं च मनवे पुलस्त्यः पुष्करे मुदा॥
मया दत्तं वत्सुभ्यं तद् यस्मै कस्मै न दोहिमो॥
याद्विहो मुच्यते त्वं च कवचस्य प्रसादतः॥
मकान्तरीणी श्रीमौ श्वभाविष्यति न ह्यशयः॥ १८॥
लक्षवर्षहविष्येण यत्फलं लभते नरः॥
तत्फलं लभते नूनं कवचस्यास्य धारणात्॥ १९॥

23 MARCH 1973 FRIDAY

Saka 2 Chait 1895

शुक्रवार २३ मार्च चैत्र बदी ४

इदं कवचमज्ञात्वा यो भूढो मास्करं भजेत् ॥
दशलक्षं प्रजप्तेऽपि मंत्रः सिद्धो न जायते ॥ १ ॥
ॐ इति श्रीब्रह्मवैवर्ते पुराणे ब्रह्मं प्रति
गुरुणा क्तः श्रीसूर्यकवचः सम्पूर्णः
सप्तारि वारः सायुधः सवाहनः
स्वाङ्गः प्रीयतां प्रीतेऽस्तु ॥ ॐ ॥

ॐ इति शुभं भूयात् ॥

ॐ श्री ॐ

॥

1 APRIL 1973 SUNDAY

Saka 11 Chait 1895

रविवार १ अप्रैल चैत्र वदी १३

ॐ अथ चक्षुरोगनिवृत्तये चाक्षुषीविद्या प्रार
म्भते ॥ ॐ ॥

ॐ ॐ आ कृष्णन रजसा वर्तमानो, निवेश-
यन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता
रथेन, आदेवो याति सुवर्णानि
पश्यन् ॥

ॐ नमः स्वर्गनाथनाथ ॥
ॐ अस्याः श्रीचाक्षुषीविद्याया अहि-
बुद्ध्या नृषिः, गायत्री कन्दः,
स्वर्गदेवता, आत्मनः चक्षुरोगनि-
वृत्तये जपे पाठे वा विनियोगः ॥
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ

2 APRIL 1973 MONDAY

Saka 12 Chait 1895

सोमवार २ अप्रैल चैत्र वदी १४

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव
मा पाहि पाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् प्रामय
प्रामय। मम जातं रूपं तेजो दर्शयेदृशं
यथाहं अहो न स्यात् तथा कल्पय क
ल्पय। कल्पाणे कुरु कुरु। यानि पूर्व
जन्मापाजितानि चक्षुः प्रतिरोधक
दुष्कृतानि तानि सर्वानि निर्मूल्य
निर्मूल्य। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे
देव्याय भारुकराय। ॐ नमः करुणा
करायाम्भताय। ॐ नमः सुखाय। ॐ
नमो भगवते सुखायार्थितेजसे नमः॥
खेचराय नमः॥ नमो नमः॥ नमो
नमः॥ तमसे नमः॥ असतो मा

24 MARCH 1973 SATURDAY

Saka 3 Chait 1895

शनिवार २४ मार्च चैत्र नदी ५

एतन्मया । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय । ॥ उक्तो भगवान्
शुचिरेव । हंसो भगवान् शुचिरे-
व प्रतिलिख्यः । ॥ य इमां चाशुष्मती-
विद्यां ब्रह्मणे जित्यमधीते न तस्य
अक्षिरोगो भवति । न तस्य कले
अन्धो भवति । अष्टौ ब्राह्मा न
प्राप्ते प्राप्स्यन्ति विद्या सिद्धिः ।

भवति ॥

॥ ॐ ॥

25 MARCH 1973 SUNDAY

Saka 4 Chait 1895

रविवार २५ मार्च चैत्र बदी ६

ॐ अथ श्रीपरमेश्वरप्रावकृतदुर्गास्तोत्रम् ॥
ॐ श्रीदुर्गतिनाथिन्यै विष्णुमायायै नाराय-
ण्यै जगदम्बिकायै मायायै संकटहारि-
ण्यै राजभयनिवारिण्यै निष्कारणवैर-
नाथिन्यै ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हुं श्रीदुर्गायै
नमो नमः ॥

रक्ष रक्ष महादेवि दुर्गे दुर्गतिनाथिनि ॥
मां भक्तमनुरक्तं च प्राप्नुयस्त कृपा माय ॥१॥
विष्णुमा महाभागे नारायणि सनातति ॥
ब्रह्मस्वरूपे परमे नित्यानन्दस्वरूपिणि ॥२॥
तं च ब्रह्मादिदेवानो मन्त्रिके जगदम्बिके ॥
तं साकारे च गुणतो निर्वाकारे च निर्गुणतः ॥३॥

28 MARCH 1973 WEDNESDAY

Saka 7 Chait 1895

बुधवार २६ मार्च चैत्र वदी ६

मायया पुरुषस्त्वेव मायया प्रकृतिः स्वयम् ॥
तयोः परं ब्रह्म परं त्वं बिभर्षि सनातनि ॥ ४ ॥
वेदानां जननी त्वं च सावित्री च परात्परा ॥
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीः सर्वसम्पत्स्वरूपिणी ॥ ५ ॥
मत्स्यलक्ष्मीश्च क्षीरोदकामिनी शेषशायिनीः ॥
स्वर्गेषु स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं राजलक्ष्मीश्च भूतले ॥ ६ ॥
नागादिलक्ष्मीः पातालं गृहेषु गृहदेवता ॥
सर्वेश्वरस्य स्वरूपा त्वं सर्वेश्वर्यो विद्यायिनी ॥ ७ ॥
रागादिष्टातृदेवि त्वं ब्रह्मणश्च सरस्वती ॥
प्राणानामधिदेवी त्वं कृष्णस्य पुरमात्मनः ॥ ८ ॥
गोलोके च स्वयं राधा श्रीकृष्णस्यैव वृक्षसि ॥
मैत्रेयादिष्टिता देवी वृन्दावनवनेवने ॥ ९ ॥

29 MARCH 1973 THURSDAY

Saka 8 Chait 1895

गुरुवार २६ मार्च चैत्र वदी १०

श्रीरासमण्डले रम्या वृन्दावनविनोदिनी॥
शतशृङ्गाधिदेवी त्वं नाम्ना चित्रावलीति च॥१॥
दक्षकन्या कुत्र कल्पे कुत्र कल्पे च प्रौलजा॥
देवमातादितित्वं च सर्वाधारा वसुन्धरा॥२॥
त्वमेव गङ्गा तुलसी त्वे च स्वाहा स्वधा सती॥
त्वदं प्रां प्रां प्राकलया सर्वदेवादि योषिता॥३॥
स्त्रीरूपं वापि पुरुषं देवित्वं च नपुंसकम्॥
वृक्षाणां वृक्षरूपा त्वं सृष्टा चाङ्कुररूपिणी॥४॥
वह्नी च दाहिकाशलि जैले प्रौढस्वरूपिणी॥
सूर्य तेजः स्वरूपा च प्रभारूपा च संततम्॥५॥
गन्धरूपा च भूमौ च अकाशे शब्दरूपिणी॥
शोभास्वरूपा चन्द्रे च पद्मसङ्गे च निश्चिन्ता॥६॥

3 APRIL 1973 TUESDAY

Saka 13 Chait 1895

मंगलवार ३ अप्रैल चैत्र अमावस

सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा च पालने परिपालिका ॥
महामारी च संहारे जले च जलरूपिणी ॥१६॥
शुक्ले दया त्वं निद्रा त्वं तृष्णा त्वं बुद्धिस्वरूपिणी ॥
तुष्टिस्त्वं वापि पुष्टिस्त्वं श्रद्धा त्वं च क्षमा स्वयम् ॥
शान्तिस्त्वं च स्वयं भान्तिः कान्तिस्त्वं कीर्तिरेव च ॥
लज्जा त्वं च तथा माया भुक्तिभुक्तिस्वरूपिणी ॥१७॥
सर्वशक्तिस्वरूपा त्वं सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥
वेदेऽनिर्वचनीया त्वं त्वं न जानाते कश्चन ॥१८॥
सहस्रवक्त्रस्त्वास्तोतुं न च शक्नुः सुरेश्वर ॥
वेदाः न शक्ताः को विद्वान् न च शक्ता सरस्वती ॥१९॥
स्वयं विधाता शक्नो न न च विष्णुः सनातनः ॥
विं सौमि पंचवक्त्रेण रणत्रस्तो महेश्वरि ॥२०॥
कृपां कुरु महाभागे नमः प्रभुभयं कुरु ॥२१॥
ज्ञाते श्रीगुणास्तोत्रः सम्पूजः शुभायास्तु ॥

26 MARCH 1973 MONDAY

Saka 5 Chait 1895

सोमवार २६ मार्च चैत्र वदी ७

ब्रह्मात्रिपुरसंग्रामे शंकराय ददौ पुरा ॥
जघान त्रिपुरं कद्रो यद्धृत्वा भक्तिपूर्वकम् ॥ २ ॥
हरो ददौ गौतमाय पद्माक्षाय च गौतमः ॥
ततो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो जयी ॥ ३ ॥
यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मा ज्ञानवाञ्छं हिमान्मुवि ॥
शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च गुरुर्यतः ॥ ४ ॥
शिवतुल्यो गौतमश्च बभूव मुनिसत्तमः ॥ ४ ॥
ब्रह्माष्टविजयस्वाप्त कवचस्य प्रजापतिः ॥
अथैष च्छन्दश्च गायत्री देवी दुर्गातिनाप्रिती ॥ ५ ॥
ब्रह्माष्टविजये चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥
पुण्यतीर्थं च महतां कवचं परमाद्भुतम् ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं दुर्गातिनाप्रिल्यै स्वाहा मे पात मस्तकम् ॥
ओं ह्रीं मे पातु कपालं च ऊं ह्रीं श्रीं इति लोचने ॥ ७ ॥

4 APRIL 1973 WEDNESDAY

Saka 14 Chait 1895

बुधवार ४ चैत्र सुदी १

ॐ अथ श्रीदुर्गाकवचम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं हुं दुर्गतिहारिण्यै दुर्गायै
नमः ॥

ॐ अस्य श्रीब्रह्माण्डविजयस्य श्रीदुर्गाकवच-
स्य प्रजापतिः ऋषि गायत्री छन्दः दुर्ग-
तिनाशिनीदुर्गादेवी देवता आत्मनो वाक्
मनः कायो प्राज्ञैतपाप्रनिवारणार्थं धर्मो-
र्थकाममोक्षार्थं ब्रह्माण्डविजये च दुर्गाक-
वचपाठे जपे वा विनियोगः ॥ ॐ ॥

ॐ नारायण उवाच ॥

ॐ शृणु नारद वक्ष्यामि दुर्गायाः कवचं शुभम् ॥
श्रीकृष्णैव यद् दत्तं गोलोके ब्रह्मणे पुरा ॥

26 MARCH 1973 MONDAY

Saka 5 Chait 1895

सोमवार २६ मार्च चैत्र वदी ७

ब्रह्मात्रिपुरसंग्रामे शंकराय ददौ पुरा ॥
जघान त्रिपुरं कद्रो यद्धृत्वा भक्तिपूर्वकम् ॥ २ ॥
हरो ददौ गौतमाय पद्माक्षाय च गौतमः ॥
ततो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो जयी ॥ ३ ॥
यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मा ज्ञानवाञ्छं हि मान्मुनि ॥
शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च गुरुर्यतः ॥ ४ ॥
शिवतुल्यो गौतमश्च बभूव मुनिसत्तमः ॥ ४ ॥
ब्रह्माण्डविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतेः ॥
अथैष कवचश्च गायत्रीदेवी दुर्गातिनाशिनी ॥ ५ ॥
ब्रह्माण्डविजये चैत विनियोगः प्रकीर्तितः ॥
पुण्यतीर्थं च महतां कवचं परमाद्भुतम् ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं दुर्गेतिनाशिन्यै स्वाहा मे पातमस्तकम् ॥
ॐ ह्रीं मे पातकपालं च ॐ ह्रीं श्रीं इति लोचने ॥ ७ ॥

5 APRIL 1973 THURSDAY

Saka 15 Chait 1895

गुरुवार ५ अप्रैल चैत्र सुदी ३

पश्चिमे पार्वतीयातु वाराही वारुणे सदा ।
ऊर्वे माता कौबेर्यामै शांन्यामीध्वरी सदा ॥ १४ ॥
ऊर्ध्वे नारायणीयातु अम्बिकायः सदावतु ॥
ज्ञाने ज्ञानप्रदायातु स्वप्ने निद्रा सदावतु ॥ १५ ॥
इति ते अर्चिते वत्स सर्वमंत्रौघविग्रहम् ॥
ब्रह्माण्डविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ १६ ॥
सुस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु यत् सदा ॥
सर्वकृतोपवासं च तत् फलं लभते नरः ॥ १७ ॥
गुरुमभ्यक्ष्य गोविन्दं वस्त्रालंकारचन्दनैः ॥
कंठे वा दक्षिणे वा हौ कवचं धारयेत् तु यः ॥ १८ ॥
स च त्रैलोक्यविजयी सर्वशत्रुप्रमदकः ॥
इदं कवचमज्ञात्वा भजेत् दुर्गतिनाशनीयम् ॥

6 APRIL 1973 FRIDAY

Saka 16 Chait 1895 रायकः
शुक्रवार ६ अप्रैल चैत्र सुदी ३

घातहृदयप्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः
कवचकण्वपारवाकं ४६ नारायणसुन्दरम् ॥
यस्मै कल्ले न दातव्यं नोपनीयं सुदुर्लभम् ॥
॥ ॐ ॥ इति श्रीदुर्गाकवचः सम्पूर्णः
सपरिवारः सकाहनः साङ्गः सायुधः
प्रीयतां प्रीतोऽस्तु ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥
॥ श्रुमं भवतु ॥

॥ ॐ ॥

7 APRIL 1973 SATURDAY

Saka 17 Chait 1895

शनिवार ७ अप्रैल चैत्र सुदी ४-५

॥ श्रीमहागायत्रीकवचम् ॥

ॐ श्रीमहागायत्री नमः ॥

ॐ श्रीमहागायत्र्यै, परमगुह्यायै, ब्रह्माविष्णु-
महेश्वरस्वरूपिण्यै, परमकलायै, प्राक्त्यै,
माध्याय्यायै सर्वार्थकाममोक्षाप्रदायिण्यै,
शुक्लेश्वर्यै वैष्णव्यै नमो नमः ॥ ॐ ॥

ॐ अस्य श्रीमहागायत्रीकवचस्य ब्रह्मा-
विष्णुमहेश्वरा! मृषयः मृषयुजुसामाथ-
वः हृन्दोहि ब्रह्मरूपा परमकला गायत्री
देवता तद्बीजमूगदसि प्राक्कृदिय।
इति कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थं जपे
(पाठे वा) विनियोगः ॥ ११ ॥

8 APRIL 1973 SUNDAY

Saka 18 Chait 1895

रविवार ८ अप्रैल चैत्र सुदी ६

ॐ महागायत्री सावित्री सरस्वत्यै नमः॥

ॐ श्री नारायण उवाच॥

अस्त्येकं परमं गुह्यं गायत्री कवचं तथा॥

पठनाद्वारणालयैः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१॥

सर्वकामानवाप्नोति देवीरूपश्च जायते।

गायत्री कवचस्यास्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः॥२॥

ऋषयो ऋषयुजसामथर्वप्रब्रह्मर्षिनारदा।

ब्रह्मरूपा देवताका गायत्री परमा कला॥३॥

तद्धीजिम्भ इत्येवा प्राक्रिरूपा मनीषिभिः॥

कीलकं च ध्रियः प्राक्कं मोक्षार्थं विनियोजनम्॥४॥

चतुर्भिर्हृदयं प्राक्कं त्रिभिर्वर्णैः शिरः स्मृतम्॥

चतुर्भिः स्मृतम् पश्चाद्विभिस्तु कवचं स्मृतम्॥

9 APRIL 1973 MONDAY

Saka 19 Chait 1895

मोमवार ६ अप्रैल चैत्र सुदी ७

चतुर्भिर्नेत्रमुदिष्टं चतुर्भिः ह्यतदस्रकम् ॥
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि सधकामीष्टदायकम् ॥६॥

अथ ध्यानम् ॥

॥ ॐ ॥

ॐ सुक्ताविद्रुमहेमूनलधवलच्छाये मुखीस्त्री-
क्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकटां तत्तार्थ-
वर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदां कुशाकराः
शुभं कपालं गुणं शंखं चक्रमधारविन्दयुग-
लं हस्तैर्वहन्ती मजे ॥

ॐ आयातु वरदा देवी त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी ॥
गायत्रीं हृन्द सांमाता ब्रह्मयोनी नमोस्तु ते ॥ ॥
गायत्रीं पूर्वतः यातु सावित्रीं पातु दाक्षिणे ।

10 APRIL 1973 TUESDAY

Saka 20 Chait 1895

मंगलवार १० अप्रैल चैत्र सुदी ८

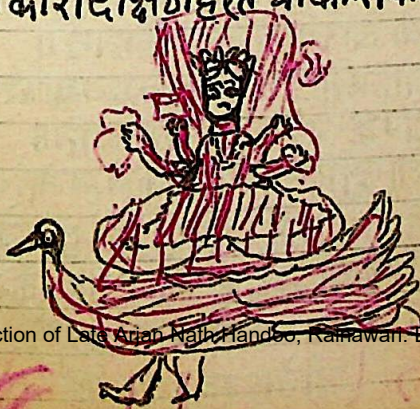
ब्रह्मसंस्था तु मे पश्चादुतरायां सरस्वती ॥१॥
पार्वती मे दिष्टां रक्षेत्पावकी जलप्राप्तेनी ॥
या तु द्यानी दिष्टां रक्षेत्पातु दानमयं करी ॥१॥
पावमानो दिष्टां रक्षेत्पावमानविलासनी ॥
दिष्टां रौद्री च मे पातु रुद्राणी कद्रुस्वपिणी ॥१०॥
कुर्व्वं ब्रह्मणि मे रक्षेदधूरता दूष्णवी तथा ॥
एवं दयादिष्टां रक्षेत्सर्वोद्भवनेश्वरी ॥११॥
तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घे मे सचित्तः पदम् ॥
वरेण्यं कटिदेशे तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥१२॥
देवस्य मे तद्वदयं श्रीमहीति च गल्लयाः ॥
अथः पदं च मे नेत्रे यः पदं मे ललाटकम् ॥१३॥
नः पदं तु पातु मे मूर्ध्नि शिखायां मे प्रवोदयात् ॥
तलपदं पातु मूर्ध्नि सकारः पातु भालकम् ॥१४॥

11 APRIL 1973 WEDNESDAY

Saka 21 Chait 1895

बुधवार ११ अप्रैल चैत्र सुदी ६

वक्षुषी तु विकाराणिस्तु कारस्तु कपोलयोः ।
तासां पुटं वकाराणां रेकारस्तु मुखे तथा ॥ १५ ॥
णिकर ऊर्ध्वमोष्ठं यकारस्त्वधोष्ठकम् ॥
आस्यमध्ये भकाराणां नाकारश्चुचुके तथा ॥ १६ ॥
देकारः कण्ठदेशे तु वकारः स्कन्धदेशकम् ॥
स्थकारो दाक्षिणी हस्तं धीकारो वामहस्तकम् ॥ १७ ॥



12 APRIL 1978 THURSDAY

Saka 24 Chait 1895

गुरुवार १२ अप्रैल चैत्र सुदी १०

मकारो हृदयं रक्षेत् हि कारो षट्पदे तथा॥
धि कारो नाभिदेशे तु यो कारस्तु कटिं तथा॥१८॥
उहो रश्मि तु यो कार ऊरु द्वौ तः पदाक्षरम्॥
प्रकारो जानुनी रक्षेत् चाकारो जङ्घादेश्वरम्॥१९॥
दकारो गुल्फदेशे तु यूकारः पादयुग्मकम्॥
तकारो व्यंजनं चैव सर्वांगमेव सर्वदा उच्यते॥२०॥
इदं तु कवचं दिव्यं बाधाघातविनाशिनम्॥
चतुःषष्टि कलाविद्यादायकं मोक्षकारकम्॥२१॥
सुच्यते सर्वप्रोपेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति॥
पठनाच्छ्रवणादपि गौ सहस्रफले लभेत्॥
ॐ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादश
स्कन्धे महागायत्रीकवचः सम्पूर्णः सपरिवारः
सुवाहनः साङ्गः सायुधः प्रीयतां ॥
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रीतोऽस्तु ॥ १॥

13 APRIL 1973 FRIDAY

Saka 23 Chait 1895

शुक्रवार १३ अप्रैल चैत्र सुदी ११

ॐ अथ महागायत्री हृदयम् ॥

ॐ नारद उवाच ॥

भगवन्देव देवेषु भूतभव्यजगत्प्रभो ।
कवचं च श्रुतं दिव्यं गायत्रीमंत्रविग्रहम् ॥१॥
अथुना श्रोतुमिच्छामि गायत्री हृदयं परम् ।
यद्धारणाद्भवत्पुण्यं गायत्री जायतेऽखिलम् ॥२॥
ॐ श्रीनारायण उवाच ॥

देव्याश्च हृदयं प्रोक्तं नारदाथर्वणस्तुटम् ।
तदेवाहं प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ॥३॥
विराड् रूपं महादेवी गायत्री वेदमातरम् ॥
ध्यात्वो तस्यास्त्वधांगेषु ध्यायेदतश्च देवताः ॥४॥
पिण्डब्रह्मांडयोरेक्या द्वावयेत स्वतनौ तथ ॥
देवीरूपी तिजे देहे तन्मयत्वाद्ये साधकः ॥५॥

Saka 24 Chait 1895

शनिवार १४ अप्रैल चैत्र सुदी १२

ना देवाऽभ्यर्चयेद्देवमिति वेदविदो विदुः॥
 ततो भेदाय कायस्वेभावायेद्देवता इमाः॥६॥
 अथ तत्संप्रवक्ष्यामि तन्मया त्वमग्रा भवेत्।
 गायत्री हृदयस्याऽस्याऽप्यहमेव ऋषिः स्मृतः॥७॥
 गायत्री छन्दः पदिसं देवता परमेश्वरी॥
 पूर्वोक्तेन प्रकारेण कुर्यादङ्गानि षट् क्रमात्॥८॥
 आहूतं विजने देवो ध्यायेद्देवकृपमानसः॥९॥
 अथार्थन्यासः द्यौर्मूर्ध्नि देवतम्। दन्तपंक्ता
 वश्विनौ॥१०॥ संचये चाष्टौ। सुखमग्निः॥
 जिह्वा सुरस्वती। ग्रीवायां तु बृहस्पतिः॥
 स्तनयोर्वसवोऽष्टौ। बाह्वोर्मोरुतः॥ हृदये
 प्रजन्त्यः॥ अकारोऽसुदरम्॥ नामाव-
 तं मे श्याम्। कंठोऽपि त्र्यम्भिः॥ जघनो

15 APRIL 1973 SUNDAY

Saka 25 Chait 1895

रविवार १५ अग्रैल चैत्र सुदी १३

विज्ञानघनः प्रजापतिः। कैलासमलये ऊरु॥
विष्णुदेवा जान्वेः। जंघायां कौशिकः॥
उत्तमयने। ऊरुपितरः। पादौ पृथिवी॥
वनस्पतयोऽमुलीषु। नृषयो रोमानि।
नखानि मुहूर्तानि। अस्थिषु ग्रहाः। अष्ट-
मांसमृतवः। सर्वे तस्य वैनिमिषम्॥ अहोरात्रो-
वादित्यं श्वन्द्रमाः। प्रवरो दिव्यं गायत्री-
सहस्रं नेत्रं शरणमहं प्रपद्ये। ॐ तत्सवितु-
र्वरेण्याय नमः। ॐ तत्सर्वज्याय नमः। ॐ
तत्प्रातरादित्याय नमः। ॐ तत्सातवादित्य-
प्रतिष्ठाय नमः। प्रातरधीयानो दिवस-
कृतं पापं नश्यति। सायं प्रातरधीया-
नो अघापो भवति। सर्वतो भेषु स्नातो भवति।

16 APRIL 1973 MONDAY

Saka 26 Chait 1895

सर्वदेवज्ञातो भवति। अवाच्यवचनात्पूतो
भवति। अमर्त्यमक्षणात्पूतो भवति। अमोक्ष
भोजनात्पूतो भवति। अचोष्यचोषणात्पूतो
भवति। असाध्यसाधनात्पूतो भवति॥
दुष्टप्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति॥
सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति। पंक्तिदूषणात्पू-
तो भवति। अनृतवचनात्पूतो भवति।
अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। अन्नं हृद-
येताद्री तैत क्रतुसहस्रेणैव भवति। षाष्टि
शतसहस्रगायत्र्या जप्यामि फलानि
भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणास्सम्यग्ग्राह्येत्
तस्य सिद्धिर्भवति। य इदं मित्यस-

17 APRIL 1973 TUESDAY

Saka 27 Chait 1895

मंगलवार १७ अप्रैल चैत्र पूर्णिमा

धीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः
प्रमुच्यत इति। ब्रह्मलोके महीयते। इत्यहं
भगवान् श्रीनारायणः ॥

ॐ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे
द्वादशास्कन्धे गायत्रीहृदयः सम्पूर्णः
सप्तद्वारः सप्तद्वारः साङ्गः सायुधः
प्रीयतां प्रीतोऽस्तु ॥

ॐ ह्रीं ॐ तत्सत् तत्सत् हरि ॐ ॥

इति शुभाय भवतु ॥

॥ ॐ ॥ ॥

18 APRIL 1973 WEDNESDAY

Saka 28 Chait 1895

बुधवार १८ अप्रैल बैसाख वदी १

ॐ अथ सयंत्र श्री इन्द्राक्षी कवचं
स्तोत्रं च ॥

ॐ श्रीमहागणेशाय नमो नमः ॥ १ ॥

ॐ नम इन्द्राक्ष्यै भगवत्यै ॥

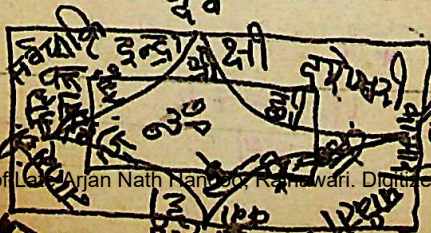
मृषकवाहन मोदकहस्त

चामरेकण विनम्रितस्तुत्र ॥

वामनरूप महेश्वरपुत्र

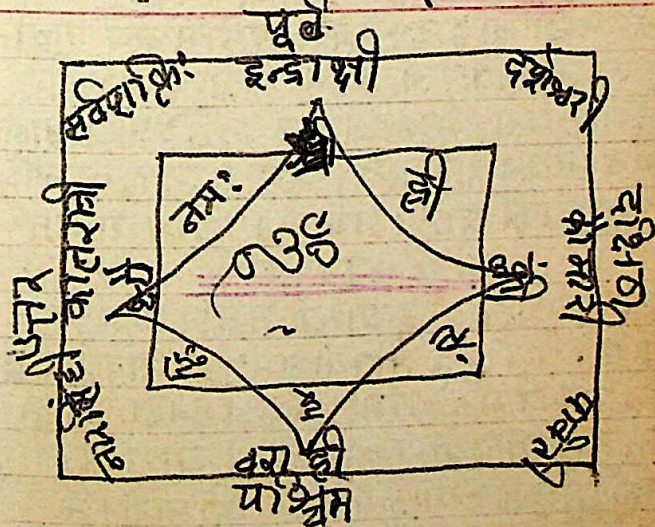
विघ्नविनायकपाद नमस्तै ॥ १ ॥

ॐ अथ श्री इन्द्राक्षी यंत्रम् ॥
पूर्व



19 APRIL 1973 THURSDAY

ॐ Saka 29 Chait 1895
गुरुवार १६ अप्रैल १९०६



इति शुभं भूयात्

390

Saka 30 Chait 1895

ॐ अथ श्री इन्द्राक्षी मन्त्रः ॥

ॐ अथ श्री इन्द्राक्षी लोत्रमहामन्त्रस्य प्राची-
 पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, इन्द्राक्षी
 दुर्गा देवता, लक्ष्मी बीजम्, भुवनेश्वरी प्राक्
 भवानीति कीलकम्, मम इन्द्राक्षी प्रसाद
 सिद्ध्यर्थं पाठे (जपे वा) विनियोगः ॥

अथ करन्यासः ॥

ॐ इन्द्राक्षीत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ महाल-
 क्ष्मीरिति तर्जनीभ्यां नमः । ॐ माहेश्वरीति
 त्रि मध्यमाभ्यां नमः । ॐ अम्बुजाक्षीति
 अनामिकाभ्यां नमः । ॐ कात्यायनीति
 कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ कौमारीति
 करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

21 APRIL 1973 SATURDAY

Saka 1 Baisakh 1895

शनिवार २१ अप्रैल बैसाख बदी ४

अथ षडङ्गन्यासः ।

ॐ इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः । ॐ महालक्ष्मी
रिति शिरसे स्वाहा । ॐ महेश्वरीति शिखायै
वषट् । ॐ अम्बुजाक्षीति कवचाय हुम् ।
ॐ कोल्यायनीति नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ कामाक्षीत्यस्त्राय फट् ॥

ॐ मूर्ध्नि वस्वरोमिति दिग्बन्धः ॥

प्राणायामः

अथ ध्यानम् ॥

नेत्राणां दशमिष्वर्तः परितुल्यमलुचमोन्वितम्,
हेमाभं महती विलम्बितशिखामासुक्केशान्वितम् ॥
घण्टामण्डितपादपद्मयुगलं नागेन्द्रकुम्भस्तनीम्,
इन्द्राक्षी परिचिन्तयामि मनसा कल्पोक्तासि-

दि प्रदाम् ॥ ॐ ॥

॥ ५४५ ॥

22 APRIL 1973 SUNDAY

Saka 2 Baisakh 1895

रविवार २२ अप्रैल बैसाख बदी ५

ॐ इन्द्राक्षी द्विभुजा देवी पीतवस्त्र द्वयावलिताम्ना
वामे हस्ते वज्रधरा दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥१॥
इन्द्रादिभिः सुरैर्विन्ध्यं वन्दे शंकरवल्लभाम् ॥
एवं ध्यात्वा महादेवी जपेत् सर्वार्थसिद्धये ॥२॥
इन्द्राक्षी नैमि शुवन्ती नानालंकारभूषिताम्ना
प्रसन्नवदनाम्भोजामप्सरोगणसेविताम् ॥३॥

नोट:-

इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः-से-अप्सरोगण
सेविताम्-तक दो बार पढना या जप
करना चाहिये ॥ ३४ ॥



23 APRIL 1973 MONDAY

Saka 3 Baisakh 1895

सोमवार २३ अप्रैल बैसाख बदी ६

ॐ श्री इन्द्र उवाच ॥

इन्द्राक्षी पूर्वतः पातु पाताग्रेय्या द्यौश्चर्या।
कौमारी दक्षिणे पातु नैर्ऋत्या पातु पार्वती ॥१॥
वाराही प्राश्निमे पातु वायव्ये तारसिंहायि ॥
उदीच्या कालरात्री मातृशान्या सर्वप्राकृत्यः ॥२॥
मैरव्यूध्वं सदा पातु पत्न्यो वैष्णवी सदा।
एवं दयादिप्रो रक्षेत् सर्वाङ्गं भुवनेश्वरी ॥३॥

अथ श्री इन्द्राक्षी कवचम् ॥

ॐ नमो भगवते इन्द्राक्ष्यै सर्वजनवप्रांकर्यै
सर्वदुष्टग्रहस्तमिन्यै स्वाहा ॥१॥
ॐ नमो भगवति पिङ्गलभैरावे, त्रैलोक्यलक्ष्मि,
त्रैलोक्यमोहिनीन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हं

फट् स्वाहा ॥२॥

Saka 4 Baisakh 1895

पंगलवार २४ अप्रैल बैसाख नदी ६

ॐ नमो भगवते मद्रकाले महादेवि कृष्णवर्णे
 तृङ्गस्तानि शूर्पहिस्ते कवाटवक्षः स्थले
 कपालधरे परपुत्रधरे चायधरे विकृतदप-
 धरे विकृतरूपे महाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतीति
 भूमौ द्रवलिप्तसर्वेणान्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष
 हुं फट् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते प्राणेश्वरि पद्मासुते सिंहवा-
 हने महिषासुरमर्दिनि, षण्णज्वरपित्तज्वर
 वातज्वर प्रलेष्मज्वर कफज्वर सैनियातज्वर
 कृत्रिमज्वर कृत्तिकादिज्वरैकाहिकज्वर
 षड्वाहिकज्वर त्र्याहिकज्वर चतुराहिक-
 ज्वर पंचाहिकज्वर पक्षज्वर मासज्वर

25 APRIL 1973 WEDNESDAY

Saka 5 Baisakh 1895

बुधवार २५ अप्रैल बैसाख बदी ७

षण्मासज्वर संवत्सरज्वर सर्वाङ्गज्वरान्
नाशाय नाशाय हर हर नहि नहि
दइ दइ पच पच ताडय ताडयाकष-
याकर्षय विद्विष! स्तम्भय स्तम्भय
मोहय मोहय उच्चाटय उच्चाटय
फट स्थाहा ॥४॥

ॐ ह्रीं ॐ भगवते प्राणेश्वरि परमा-
सने लम्बोष्ठि, कम्बुकर्णिके, कलि-
कामरूपिणि, परमत्रयत्रयपरत-
त्रयप्रभेदिनि, प्रतियक्षविध्वंसिनि, पर-
बलसुगैविनादिनि प्राचुकस्त्वैदिनि
सकलदुष्टज्वरनिवारिणि, भूतप्रेत-

26 APRIL 1973 THURSDAY

Saka 6 Baisakh 1895

गुस्वार २६ अप्रैल बैसाख बदी ८

पिशाचब्रह्मराक्षसयक्षयमदुतशाकिनी-
डाकिनी तीका मिनीस्तम्बिनी मोहिनी-
वशांकरी कुक्षिरोगाघोरारोग नेत्ररोग-
क्षयापस्मारकुष्ठादि महारोगानेवारिणि
मम सर्वरोगान् नाशय नाशय ह्रीं ह्रीं
हूं हूं ह्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहा ॥ ५ ॥
ओं ऐं श्रीं हूं हुं इन्द्राग्निं मां रक्ष रक्ष
मम प्रातृन् नाशय नाशय जलरोगान्
प्राशय प्राशय हुं खव्याधीन् स्फोटय
स्फोटय कुरानरीन् मञ्जय मंजय मने-
यग्निप्राणयग्निशिरोयग्नीन् काटय
काटय काटय इन्द्राग्निं मां रक्ष रक्ष
हुं फट् स्वाहा ॥ ६ ॥

27 APRIL 1973 FRIDAY

Saka 7 Baisakh 1895

शुक्रवार २७ अप्रैल बैसाख वदी ६

ॐ नमो भगवते माहेश्वरि महाचिन्ता
मणि दुर्गे सकल सिद्धेश्वरि सकलजन
मनोहारिणि, कालकालरात्रि, अनले
अजिते अभये महाघोररूपे विश्वरूप-
पिण्डि मधुसूदननि, महाविष्णुस्वरूप-
पिण्डि, नेत्रशूलकर्णशूल कटिशूल पक्ष-
शूल पाण्डुरोगकमलादीन् नाशाय
नाशाय वैष्णवि ब्रह्मास्त्रेण, विष्णु-
चक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणे-
नाशाय, वासवज्जेण सवानरीन्
भंजय भंजय यक्षगृह राक्षसगृह
सन्ध्यागृह विनायकगृह बालगृह -

28 APRIL 1973 SATURDAY

Saka 8 Baisakh 1895

बुधवार २८ अप्रैल बैसाख बदी १०

चौरग्रह कुष्माण्डग्रहादीन् निवृत्त
निवृत्त, राजयक्ष्मक्षयरोगतापज्वर-
निवारिणि मम सर्वज्वरान् नाशाय
नाशाय सर्वघटान् उच्चाटय उच्चाटय
हुं फट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ॥

ॐ अथ इन्द्राक्षी स्तोत्रम् ॥

ॐ इन्द्राक्षी स्वयंनयनां दाप्रां कुप्राधरां पराम् ॥
द्विभुजां सिंहमध्यस्थामजेऽहमभयंकरीम् ॥
जयन्ती मङ्गलाकारी मद्रकाक्षी कुपालिनी ॥
दुर्गा शमा शिवाधारी स्वधा स्वाहा
नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अष्टौ जगला वै द्रमुखी कालरात्री तपस्विनी ॥ ३ ॥
29 APRIL 1973 SUNDAY

Saka 9 Baisakh 1895

रविवार २८ अप्रैल वैशाख बदी ११

ॐ श्री इन्द्र उवाच ॥

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः ससुदाहृता ॥
गीरी प्राकम्भरी देवी दुर्गा नामैति विश्रुता ॥
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपाः ॥
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी रा
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णाप्रेङ्गला ॥ ४ ॥
मेघस्वना सहस्राक्षी विकटाङ्गी जलोदरी ॥ ५ ॥
महोदरी सुक्लकेशी घोररुपा महाबला ॥ ६ ॥
अजिता भद्रदाऽनन्दारोगहर्त्री शिवप्रिया ॥ ७ ॥
शिवदुती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ॥ ८ ॥
इन्द्राणी इन्द्ररुपा च इन्द्रप्राक्किः परायणा ॥ ९ ॥
एता सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥ १० ॥

Saka 10 Baisakh 1895

सोमवार ३० अप्रैल बैशाख वदी १८

एकाक्षरी पराब्राह्मी स्थूलसूक्ष्मप्रवर्तिनी।
 तित्यं सकलकल्याणी भोगमोक्षप्रदायिनी॥७॥
 महिषासुरसंहर्त्री चासुष्ठु सप्तमातृका।
 कराही नारसिंही च भीमा भैरवी वनादिनी॥८॥
 धृतिः स्मृतिर्धातुमेधा विद्यालक्ष्मी सरस्वती॥
 अनन्ता विजयायणा मानलोका पराजिता॥९॥
 भवानी पावती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवी॥
 शिवा भवानी रुद्राणीशंकराब्ज प्रारीरिणी॥१०॥
 देवावतगजारुद्धा वज्रहस्ता वरप्रदा॥
 धामनी कौञ्चिकामाक्षी कणन्या शिव्यनूपा॥
 त्रिपाद् भस्मप्रहरणा त्रिशिरा शूललोचनी॥११॥
 शिवावशिवरूपा च शिवमाक्षि परायणा॥१२॥

1 MAY 1973 TUESDAY

Saka 11 Baisakh 1895

मंगलवार १ मई बैसाख बदी १३

शुभं भवतु शुभा मद्रामाया सर्वरोगनिवारिणी॥
रेन्दी देवी सदा कालं प्रान्तिमाशु करोतु मे॥१॥

॥ॐ महामायाय विद्महे,
रक्तेनेत्राय धीमहि -

नमो ज्वरहरः प्रकोदयातु॥

॥ इति गायत्री कवचस्य ॥॥

॥ अथ पुष्पफल कथयते ॥॥

एतत् स्तोत्र जपेन्नित्यं सर्वव्याधिनिवारकम्।
रुणे रुजमये प्रौढे सर्वत्र विजयी भवेत्॥४॥
एतन्नामप्रदे दिव्यैः सुता शक्रेण धीमतो॥
सो मे प्रीत्या सुखं दद्यात्सर्वपापनिवारिणी॥२॥

2 MAY 1973 WEDNESDAY

Saka 12 Baisakh 1895

बुधवार २ मई बैसाख अमावस

ज्वरं मृतज्वरं चैव शीतोष्णज्वरमेव च ॥
ज्वरं ज्वरातिसारं चैव अतिसारज्वरं हर ॥३॥
प्रातमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
आवर्तयेन् सहस्रं तु लभते वाञ्छितं फलम् ॥४॥
एतस्मात्तन्मिदं पुण्यं जपेत् आयुष्यवद्भुतम् ॥
विनाशाय च रोगाणामपमृत्युहराय च ॥५॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्यैः प्रीते सर्वार्थसाधिके ।
प्रारण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥६॥
अनेन इन्द्राक्षीकवचस्तोत्रपाठेन
श्री इन्द्राक्षीभावाती सम्पूनी सपरिवारा
साङ्गा सकाटना सायुधा प्रीयतां

॥ प्रीताऽस्तु ॥

3 MAY 1973 THURSDAY

Saka 13 Baisakh 1895

गुरुवार ३ मई बैसाख सुदी १

ॐ अथ श्रीसरस्वतीकवचम् ॥

ॐ श्रीमहासरस्वत्यै श्रुतिस्मारायै श्रुति-
पूजितायै विद्याप्रदायै सर्वजाढ्यापहार्यै
सर्वतत्त्वज्ञानदायै सर्वार्थसाधकायै वाग्देव-
तायै अक्षरस्वरूपिण्यै पुस्तकवासिन्यै
वागवादिन्यै विद्याधिष्ठायै सर्वरत्ना-
धिष्ठोन्नयै मन्मथबीजायै गुणरूपायै
सरस्वत्यै भगवत्यै नमो नमः ॥

विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्री सर्वपूजितस्य सरस्वतीकव-
चस्य विप्रेन्द्रः प्रजापतिः ऋषिः बृह-
स्पतिः इन्द्रः प्रभुः रामेश्वरः देवताः
सर्वार्थसाधनेषु सर्वोत्तम कवितासु च ॥

4 MAY 1973 FRIDAY

Saka 14 Baisakh 1895

शुक्रवार ४ मई बैशाख सुदी २

सर्वतत्त्वपरिज्ञानं प्राप्त्यर्थे मनो कामना
सिद्धयर्थे सर्वजाढ्यापहरणे पाठे जपे-
वा विनियोगः ॥

अथ ध्यानम् ॥

ॐ सरस्वति महामाते विद्ये कमललोचने ।
विश्वरूपि विद्यालक्षि विद्यां देहि सरस्वती ॥ ३ ॥

ॐ श्री ब्रह्मा उवाच ॥

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम् ॥
श्रुतिसारं श्रुतिमुखं श्रुत्य कं श्रुतिपूजितम् ॥ १ ॥
एकं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दावने वने ॥
रासे श्वरेण विभुना रासने रासमण्डले ॥ २ ॥

5 MAY 1973 SATURDAY

Saka 15 Baisakh 1895

शनिवार, ५ मई बैसाख सुदी ३

अतीवगोपनीयं च कल्पवृक्षसमं परम् ॥
अश्रुताद्भुतमंज्जानां समूहैश्च समन्वितम् ॥३॥
यद्भुता पठनाद्बुद्धिर्मांश्च बहुभूयतिः ।
यद्भुता भगवाञ्छुक्रः सर्वदैत्येषु पूजितः ॥४॥
पठनाद्भारणाद्वाग्मीकवीन्द्रोवाल्मीको मुनिः ।
सायम्भुवो मनुश्चैव यद्भुता सर्वपूजितः ॥५॥
कणोदोगौतमकण्वः पाणिनिः शाकटायनः ॥
ग्रन्थं चकार यद्भुता दक्षः कात्यायनः स्वयम्भुः ॥६॥
धृत्वा वेदविभागं च पुराणान्यखिलानि च ॥
चकार लीलामंत्रेण कृष्णद्वैपायनः स्वयम्भुः ॥७॥
प्रतापश्च सर्वतो वशिष्ठश्च पराशरः ॥
यद्भुता पठनाद्ग्रन्थं याज्ञवल्क्यश्चकार सः ॥८॥

6 MAY 1973 SUNDAY

Saka 16 Baisakh 1895

रविवार ६ मई बैसाख सुदी ४

मह्यश्रंगे भार द्वाजश्चास्तीको देवलस्तथा।
जैगीषव्योऽथ जाबलि र्यदुत्वा सर्वपूजितः॥१॥
कवचस्यास्य विप्रेन्द्र मृषिरेष प्रजापतिः॥
स्वयं बृहस्पतिपू कन्दो देवो रामेश्वरः प्रभुः॥२॥
सर्वतत्त्वपरिज्ञानं सर्वार्थसाधनेषु च॥
कावितानु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः॥३॥
ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा प्रियरे मे पात सर्वतः॥
श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भासे मे सर्वदा वतु॥४॥
ॐ सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रं पात मिरन्तरम्॥
ॐ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा त्रेत्रयुगं सदा वतु॥५॥
ॐ ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासं मे सर्वतोऽवतु॥
ह्रीं विद्याधायै स्वाहा ओषं सदा वतु॥६॥

7 MAY 1973 MONDAY

Saka 17 Baisakh 1895

सोमवार ७ मई बैसाख सुदी. ५

ॐ श्री ह्रीं ब्राह्मणे स्वाहेति दन्तपंक्तिः सदा वतु ॥
ॐ मित्येकाक्षरो मंत्रो मम कण्ठे सदा वतु ॥ १५ ॥
ॐ श्री ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धं मे श्रीः सदा वतु ॥
श्री विद्याधिष्ठातृ देव्यै स्वाहा वक्षः सदा वतु ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं विद्यास्वरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाय ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं वाण्यै स्वाहेति मम पृष्ठं सदा वतु ॥ १७ ॥
ॐ सर्वव्यापिकायै पादयुग्मं सदा वतु ॥
ॐ योगाधिष्ठातृ देव्यै सर्वोद् मे सदा वतु ॥ १८ ॥
ॐ सर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा ग्रन्थ्यां सदा वतु ॥
ॐ ह्रीं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाऽग्निदिशि रक्षतु ॥ १९ ॥
ॐ ह्रीं श्री सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा ॥
सततं मंत्रराजोऽयं दक्षिणे मे सदा वतु ॥ २० ॥

8 MAY 1973 TUESDAY

Saka 18 Baisakh 1895

संगलवार ८ मई बैसाख सुदी ६

ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मंत्रो नैऋत्यां मे सदावतु ॥
कविजिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा मां वारणेऽवतु ॥ २१ ॥
ॐ सदांभिकायै स्वाहा वायव्यां मां सदावतु ॥
ॐ गद्यपद्यवासिन्यै स्वाहा मां मुत्तरेऽवतु ॥ २२ ॥
ॐ सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु ॥
ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा चोद्वे सदावतु ॥ २३ ॥
ॐ ग्रन्थबीजरूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु ॥
ॐ ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहा द्यौं मां सदावतु ॥ २४ ॥
इति ते कथितं विष्णुसर्वमंत्रौ धविगृह्य ॥
इदं विश्वजये नाम कवये ब्रह्मरूपिणाम् ॥ २५ ॥
पुराश्रुतं धर्मवक्त्रात् पर्वते गन्धमादते ॥
ते वस्नेहान्नयारव्यातं प्रवक्तव्यं न कस्याचित् ॥

9 MAY 1973 WEDNESDAY

Saka 19 Baisakh 1895

बुधवार ६ मई बैसाख सुदी ७-८

एकमभ्यर्च्य विधिवत् वस्त्रालंकारचन्दनैः।
प्रणम्य दण्डुवतभूमौ केवचं धारयेत्सुधी॥२॥
पंचलक्षजपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत्॥
यदि स्यात्सिद्धकवचे षट्स्यतिसमे भवेत्॥२५॥
महाबार्मी कर्वाण्डश्च त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥
प्राक्क्रोति सर्वजेतुं सः कवचस्य प्रसादतः॥२१॥
इति ते काण्वग्राहोक्तं कथितं कवचं सुने॥
तौत्रं पूजाचिदानं च ध्याने च वन्दने तथा॥३०॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे प्रकृतिखण्डे
नारायणनारदसंवादे श्रीसरस्वतीकवचः
सम्पूर्णः स्मरितारः स्वादुतः सायुधः
साङ्गः प्रीयतां प्रीतोऽस्तु॥ ३३॥
इति शुभं मया लोके कथ्यम्॥

10 MAY 1973 THURSDAY

Saka 20 Baisakh 1895

गुरुवार १० मई बैसाख सुदी ६

॥ ॐ अथ भवानीनामसहस्रस्तोत्रम् ॥ १२३॥

ॐ नमो दुर्गातनायै नमो दुर्गायै
जगदम्बिकायै अम्बायै जगत्कल्याणकारिणी
दुःखहारिण्यै निष्कारणवैरनायै माया
यै प्रारब्धायै प्रारणागतवत्सलायै महामायायै
भवान्यै ॥ ॐ ॥

अरिपाङ्गकृपाविशेषाणां सुधनुः शूलक
तर्जनी दधाना ॥ भवतां महिषासुरसं
नवदूरीकृत्या श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥ १॥

ॐ श्रीं स्वस्तिशूलप्रारचापकरां त्रिनेत्रां,
तिग्मितरां शुकलया विलसत्किरीटाभू ॥
सिंहस्थितां ममुरसि दलुतां व दुर्गां

11 MAY 1973 FRIDAY

Saka 21 Baisakh 1895

शुक्रवार ११ मई बैसाख सुदी १०

पूर्वा निमं दुरितदुःखहरां नमामि ॥ २ ॥
अकलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ति ।
मधुरमधुपिबन्ती कण्टकान्मक्षयन्ती ॥ ३ ॥
हारैरतमप्रहरन्ती साधकान्योषयन्ती ।
जयातिजगति देवी सुन्दरी श्रीडयन्ती ॥ ४ ॥
चतुर्भुजा मेकवक्त्रां दर्शेन्दुवदनप्रभाम् ॥
खड्गपाकिधरां देवी वरदाभयपाणिकाम् ॥ ५ ॥
प्रेतसंहृष्टां महारौद्रीं भुजगेतोपवीतिनीम् ।
भवानी कालसंहारबद्धमुद्राविभूषिताम् ॥
जगत्स्थितिकरीं ब्रह्माविष्णुरुद्रादिभिः सह ॥
स्तुतां तां परमेश्वरानी नौम्यहं विद्महा रिणोम् ॥

12 MAY 1973 SATURDAY

Saka 22 Baisakh 1895

शनिवार १२ मई बैसाख सुदी ११

नमो भगवते —

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ।
ध्यानापरतमासीतं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ॥
सुरासुरादिरोरत्तराक्षितांघ्रियुगं प्रभुम् ॥
प्रणम्य शिरसानन्दी बद्धाञ्जलिं रमायता ॥

ॐ श्री नन्दकेश्वर प्रवाच ॥

देवदेव जगन्नाथ संप्रायोक्ति महात्मम ॥
रट्टस्य मेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तिवत्सलम् ॥
देवतायास्त्वया कस्याः स्तोत्रमेतद् दिवनिष्पाम् ॥
प्रवृत्तेर्विरतं नाथ त्वत्तः किमपरं परम् ॥
इति पृष्टस्तदा देवा नन्दिकेन जगद्गुरुः ॥
प्रवाच भगवानेको विक्रान्तैर्नयैकजः ॥

13 MAY 1973 SUNDAY

Saka 23 Baisakh 1895

रविवार १३ मई बैसाख सुदी १२

ॐ श्रीभगवानुवाच ॥

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृथ्वानसिनां च यत् ॥
स्कन्दस्यपि च यद्देव्यं रहस्यं कथयामि तत् ॥
पुरा कल्पक्षये लोकान् सिद्धिमुद्धचेतना ॥
गुणत्रयमयी प्राक्किमैलप्रकृतिसंज्ञता ॥
तस्यामर्हं सुमुत्तमस्तत्तैस्तैर्महदादिभिः ॥
वेत्तनेति ततः प्राक्किमौ काव्यालिङ्ग्यतस्तुभ्यं ॥
हेतुः संकल्पजातस्य मनोधिष्ठानी शुभा ॥
इच्छति परमा प्राक्किरुनिर्मली ततः परम् ॥
ततो वागिति विख्यातो प्राक्कि शब्दमयी परा ॥
प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ॥
ब्राह्मी च वैष्णवी सौंदी कौमारी पार्वती शिवा ॥

14 MAY 1973 MONDAY

Saka 24 Baisakh 1895

सोमवार १४ मई बैसाख सुदी १३

सिद्धिदा बुद्धिदा दाना सर्वसङ्गलदायिनी।
तथैतत्सूज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते।
तथैतत्प्राप्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते॥
अर्विता प्रणता ध्याता सर्वभाव विनिश्चिता॥
आराधिता स्तुता सर्वैर्गुणैः सिद्धिप्रदायिनी।
तस्या अनुग्रहो देवतामेव स्तुतवानहम्॥
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सैः लोक्यप्राणिपूजितैः॥
स्त्वेनातेन सन्तुष्टा मां प्रविवेश सा॥
तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमम्॥
तत्प्रभवान्मया स्तुतं जगदेतच्चराचरम्॥
ससुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानवम्॥
सपन्नगं ससमुद्रं सपौलसनकाननम्॥

15 MAY 1973 TUESDAY

Saka 25 Baisakh 1895

मंगलवार १५ मई बैसाख सुदी १३

सराधिग्रह नक्षत्रं पंचभूतगुणान्वितम् ॥
नन्दिनामसहस्रेण स्तुतेनातेन सर्वदा ॥
स्तुते परापरा प्रार्थिं समानुग्रहकारिणीम् ॥
इत्युक्तोपरतं देवं चराचरगुरुं विभुम् ।
प्रणम्य शिरसान्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ॥
ॐ श्री नन्दिकेश्वर उवाच ॥
भगवन्देवदेवो ह्यहो लोकनाथ जगत्पते ॥
महोष्मि तव दासोऽस्मि प्रसादः क्रियतां मयि ।
देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि ॥
श्रौतमिच्छामि हं देव प्रभावमपि चास्य
तु ॥ ॐ ॥

16 MAY 1973 WEDNESDAY

Saka 26 Baisakh 1895

बुधवार १६ मई बैसाख सुदी १४

ॐ श्री भगवान्वाच॥

शृणु तन्दिनमहामागस्तवराजमिमं शुभम्॥
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम्॥
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः॥
त्रिकांशं श्रद्धया बुद्ध्या नितः परतरः स्तवः॥

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्रीभगवतीनामसहस्रस्तवराज-
स्य महादेवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः,
ओङ्कारा प्रारम्भः, भगवती भगवती देवता,
ह्रीं वीजं, श्री शक्तिः, ह्रीं कीलकं, आत्मता
वाङ्मनः काये प्राप्तिं तयापनिवारणार्थं
अमुककामना सिद्ध्यर्थं पठे विनियोगः॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rajnawari. Digitized by eGangotri

॥ ३० ॥

17 MAY 1973 THURSDAY

Saka 27 Baisakh 1895

गुरुवार १७ मई बैसाख पूर्णिमा

अथ कर न्यासः

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ महा-
मायायै तर्जनीभ्यां नमः, ॐ पार्वत्यै मध्य-
माभ्यां नमः, ॐ गिरिप्रापि यायै अनामिका-
भ्यां नमः, ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥
ॐ करालिन्यै अरत्नकरपट्टाभ्यां नमः॥

अथ षडङ्ग न्यासः॥

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः॥ ॐ महा-
मायायै प्रियसे स्वाहा॥ ॐ पार्वत्यै शिरसायै
तुष्टम्, ॐ गिरिप्रापि यायै कुक्ष्याय नमः॥
ॐ गौर्यै नेत्रत्रयाय वीष्टम्, ॐ करालिन्यै
अस्त्राय नमः॥ ॐ प्राणायामः ॐ ॥

18 MAY 1973 FRIDAY

Saka 28 Baisakh 1895

शुक्रवार १८ मई ज्येष्ठ बदी १

॥ अथ ध्यानम् ॥

बालाकमण्डलामासं चतुर्बहुं त्रिलोचनम् ।
पाशांकुपापारांश्चापे धारयन्ती शिवांभजे ॥
अधेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्याम् ।
अम्भोजपाशास्त्रिणिरक्तकपालहस्ताम् ॥
रक्ताङ्गरागरशताभरणं त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ॥
॥ ॐ बीजत्रयाय विद्महे, तत्प्रधानाय
धौमहि, तन्नः प्राप्तिः प्रवादयात् ॥ मूलम् ॥
॥ ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं भवन्ति
हुं फट् स्वाहा ॥

19 MAY 1973 SATURDAY

Saka 29 Baisakh 1895

शनिवार १६ मई ज्येष्ठ बदी २

ॐ श्री विश्वर उवाच ॥

ॐ महाविद्या जगन्माता महालक्ष्मी शिवप्रिया ॥
विष्णुमाया शुभाशाता सिद्धा सिद्धसरस्वती ॥१॥
क्षमा कान्तिः प्रभज्येस्मा पार्वती सर्वमङ्गला ॥
हिङ्गुला चण्डिकादाना यद्वा लक्ष्मीहि विप्रिया ॥२॥
त्रिपुरा नन्दिनी नन्द्या सुनन्द्या सुरवन्दिता ॥
यज्ञविद्या महामाया वेदमाता सुधाधृति ॥ ३ ॥
प्रीतिप्रिया प्रसिद्धा च सृष्टानि विन्यवसिनी ॥
सिद्धा विद्या महाशक्तिः पृथ्वी नारदसेविता ॥४॥
पुरुषोत्तमप्रिया कान्ता कामिनी यद्गलोचना ॥
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥५॥
ज्वालामुखी सुगोत्रा च ज्योतिः कुमदहासिनी ॥

20 MAY 1973 SUNDAY

Saka 30 Baisakh 1895

रविवार २० मई ज्येष्ठ वदी ३

दुर्गमा दुर्लभा विद्या स्वर्गतिः पुरवासिनी ॥६॥
अपर्णा प्राम्बी माया मदिरा मृदुहासिनी ॥
कुलवर्गीश्वरी नित्यानित्यास्तेना कृपादरी ॥७॥
कामेश्वरी च नीला च भीरुण्डा वह्निवासिनी ॥
लम्बोदरी महाकाली विद्याविद्येश्वरी तथा ॥८॥
नरेश्वरी च सत्या च सर्वसौभाग्यवर्धिनी ॥
सङ्कर्षणी नारसिंही वैष्णवी च महोदरी ॥९॥
कात्यायनी च चम्पा च सर्वसम्पत्तिकारिणी ॥
नारायणी महानिद्रा योगनिद्रा प्रभावती ॥१०॥
प्रज्ञापरमिता प्रज्ञा तारा मधुमती मधु ॥
ॐ श्रीराजसुताहला कालिका सिंहवाहना ॥११॥
श्रीराजसुताहला कालिका सिंहवाहना ॥१२॥

21 MAY 1973 MONDAY

Saka 31 Baisakh 1895

सोमवार २१ मई ज्येष्ठ बदी ४

ॐकारा च सुआहारा चेतना कोपना कीर्तिना ॥
अर्धबिन्दुधराधोरा विश्वमाता कलावती ॥१२॥
पद्मावती सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती ॥
कुण्डासना जगद्गङ्गा बुद्धमाता जिनेश्वरी ॥१३॥
जिनमाता जिनैन्द्रा च प्रारदा हंसवाहना ॥
राज्यलक्ष्मी वषट्कारा सुधाकार सुधात्मिका ॥१४॥
राजनीतिस्त्रयीवार्ता देवकीतिः क्रियावती ॥
सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा सद्गतिः सत्परायणा ॥१५॥
हिन्दुर्मैत्र्याकिनी गङ्गा यमुना च सरस्वती ॥
गोदावरी विष्णुप्राय कावीरी च प्रातर्ददा ॥१६॥
सरयूश्रद्धाभागा च कौशिकी गङ्गुकी अचिः ॥
नर्मदा कर्मनाशा च चर्मरक्तपथदेविका ॥१७॥

22 MAY 1973 TUESDAY

Saka 1 Jyesth 1895

मंगलवार २२ मई ज्येष्ठ बदी ५

वेत्रवती वितस्ता च वरदा नरवाहना ॥
सती पतिव्रता साध्वी सुचक्षुः कुण्डवाहिनी ॥ १८ ॥
हृत्क्षुः सहस्रक्षी सुश्रेणिर्गंगामालिनी ॥
सेनाश्रेणिः पताका च सुब्यूहा युद्धकाक्षिणी ॥ १९ ॥
पताकिनी दयारम्भा विपेची पद्मप्रिया ॥
परापरकलाकांता मिथ्याकर्मेशदायिनी ॥ २० ॥
हेंद्री महेश्वरी बाह्या कामरी कुलवाहिनी ॥
इच्छा भावती शोभः कामधेनुः कृपावती ॥ २१ ॥
वज्रायुधा वज्रहस्ता वल्ली चण्डिका क्रमा ॥
गौरी सुवर्णवर्णा च स्थिति सहस्रकारिणी ॥ २२ ॥
एका नेका महेश्या च प्रीतबाहु मङ्गा मुजा ॥
मङ्गलप्रदा मुखा मन्त्रवक्त्रा मन्त्रासिनी ॥ २३ ॥

23 MAY 1973 WEDNESDAY

Saka 2 Jyesth 1895

बुधवार २३ मई ज्येष्ठ बदी ६

षट्चक्रभेदिनी शूरा कायस्था कायवर्जिता ॥
सुस्मिता सुशुद्धीक्षामा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ २४ ॥
अजाव बहुवर्णा च पुरुषार्थप्रवर्तिणी ॥
रक्ता नीला सिता प्रयामा कृष्णा पीता च कर्बुरा ॥ २५ ॥
धुधा वृष्णा जरा वृद्धा तरुणी करुणालया ॥
कला काष्ठा मुहूर्ता च निमेषा कालव्यपिणी ॥ २६ ॥
सुवर्णरत्नानां सौ चक्षुः स्पर्शवती रसा ॥
गन्धप्रिया सुगन्धा च सुसूक्ष्मा च मनोगतिः ॥ २७ ॥
वृणानामि नृणां शीघ्रकर्षुरा मोदधारेणी ॥
पद्मयानिः सुकेप्री च सुलिंगभगवदपिनी ॥ २८ ॥
यौनिषुद्रा महासुद्रा खचरी खगगामिनी ॥
मधुश्रीर्मायवी वल्ली मधुमता मदोद्धता ॥ २९ ॥

24 MAY 1973 THURSDAY

Saka 3 Jyesth 1895

गुरुवार २४ मई ज्येष्ठ वदी ७

मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणे शुचादिनी॥
रक्ताम्बरधरा श्रीबा रक्तपुष्पावतं सिनी॥ ३०॥
शुभ्राम्बरधरा धीरा महाशेता वसुप्रिया॥
सुवेषी पद्महस्ता च मुक्ताहार विभूषिता॥ ३१॥
कैटवरा मेदिनिश्वासः पद्मिनी पद्ममन्दिरा॥
खड्गिनी चक्रहस्ता च मुसुण्डी परिधायुधा॥ ३२॥
व्याधिनी पाशहस्ता च त्रिशूलवर धरिणी॥
सुबाणा प्राक्कहस्ता च मयूरवरवाहना॥ ३३॥
वरायुधवरा वीरा वीरपानमदोत्कटा॥
वसुधा वसुधारा च जया प्राकम्भनी शिवा॥ ३४॥
विजया यजयन्ती च सुस्तनी प्रात्रुनाशिनी॥
अन्तर्वती वेदशक्ति वैरदा वरधारिणी॥ ३५॥

25 MAY 1973 FRIDAY

Saka 4 Jyesth 1895

शुक्रवार २५ मई ज्येष्ठ वदी ८

श्रीतला च सुशीला च बाल प्रह विन शिनी ॥
कौमारी वसुधा च कामाख्या कामवादिता ॥ ३० ॥
जालंधर अरु नंता कामरूप निवाहिनी ।
कामबीजवती सत्या सत्यधर्मचरा यणी ॥ ३१ ॥
स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा सुक्ष्म बुद्धि प्रबोधिनी ॥
षट्कोणा च त्रिकोणा य त्रिनेत्रा वृषभध्वजा ॥ ३२ ॥
वृषप्रिया वृषरुढा मुदिषा सुरदाहिनी ॥
सुखदर्यरहा दीपा दीपपावक संनिभा ॥ ३३ ॥
कपालभूषणा काली कपालमालमारीणी ॥
कपालकुण्डला दीर्घा शिवदूती घनध्वनि ॥ ३४ ॥
शिद्धिदा बुद्धिदा नित्या सत्यमार्ग प्रबोधिनी ॥
केलु प्रीता वसुमती च्छेत्रच्छाया कृतालया ॥ ३५ ॥

26 MAY 1973 SATURDAY

Saka 5 Jyesth 1895

शनिवार २६ मई ज्येष्ठ बदी ६

जगद्भो कुण्डलिनी भुजगाकार प्रायिनी॥
प्राणसुखप्रपञ्चाच्च नाभि नालमृणालिनी॥४॥
मूलाधारानिराकारो वह्निकुण्डलालया॥
वायुकुण्डसुखासीना निराधारा निराश्रया॥५॥
आलोच्य वासगतिजीवाद्यादिनी वह्निसंश्रया॥
वल्लीतंतुसमुत्थाना षड्रसस्वादलोत्तया॥६॥
तपस्विनी तपःसिद्धिस्तपसा सिद्धिदायिनी॥
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तपसी च तपः प्रिया॥७॥
सप्रधातुमयी मूर्तिः सप्रधातुवराश्रया॥
देहपुष्टिर्मनः पुष्टिरन्नपुष्टिर्विलाद्वता॥८॥
क्षोबादिर्वैद्यमाता च द्रव्यशक्तिप्रभावती॥
वेद्या वेद्यचिक्लिषा च सुषुप्ता रोगनाशिनी॥९॥

27 MAY 1973 SUNDAY

Saka 6 Jyesth 1895

रविवार २७ मई ज्येष्ठ बदी १०

मृगया मृगामंसादा मृगत्वं मृगलोचना॥
वायुरा बंदरूपा च वधरूपा वधोद्भवा॥४७॥
वंदी वंदिस्तुता कारा काराबंधाविमोचिनी॥
भृङ्गला खलहा विद्युद् वृढबंधविमोचिनी॥४८॥
आम्बकाम्बालिका चाम्बा खक्षामाधुज्जा चिता॥
कौलिकी कुलविद्या च सुकुलाकुलपूजिता॥४९॥
कालचक्रममामंता विममाममनाप्रेमिनी॥
वात्याली मेघमाला च सुवृष्टिः सम्यवाधिनी॥५०॥
अकारा चूडकारा च उकारे कारखोपिणी॥
ह्रींकारी बीजरूपा चूंकी काराम्बरवासिनी॥५१॥
सर्वेश्वरमयी मूर्तिरक्षरावर्णमालिनी॥
सिंदूरारुणीवर्णा च सिंदूरतिलकप्रिया॥५२॥

28 MAY 1973 MONDAY

Saka 7 Jyesth 1895

सोमवार २८ मई ज्येष्ठ वदी ११

वप्या च वप्यबीजा च लोकवप्यविमाविनी ॥
नृपवप्या नृपसेव्या नृपवप्यकरी प्रिया ॥ ५३ ॥
महिषी नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी ॥
नृपधर्ममयी धन्या धनधान्यविवर्धिनी ॥ ५४ ॥
चतुर्वर्णमयी मूर्तिश्चतुर्वर्णः सृष्टिता ॥
सर्वधर्ममयी हि दुश्चतुराश्रमबाहिनी ॥ ५५ ॥
ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्रा चावरणजा ॥
वेदमार्गरेता यज्ञा वेदविश्वविमाविनी ॥ ५६ ॥
अस्त्रशस्त्रमयी विद्या वरशस्त्रास्त्रधारिणी ॥
सुमेधा सत्यमेधा च भद्रकल्पप्रदा जित्ता ॥ ५७ ॥
गायत्री सत्कृतिः संध्या सावित्री त्रिपदाश्रया ॥
त्रिसेध्या त्रिपदो धात्री सुपरो सामगायत्री ॥ ५८ ॥

१ अदादशादिनी प्रेक्षा प्रेक्षासिनी वासिनी ।
२ गीतवृत्तप्रिया अक्षयः सुखिदा पुष्टिदा क्षया ॥
मंगलवार २६ मई १९०८ वदो १२

पञ्चाली बालिका बाला बालाक्रीडासनातनी ॥
गर्भाधारधरा भूत्या गर्भाशयनिवासिनी ॥ ५० ॥
सुरारिघातिनी कृत्या घृतना च तिलोत्तमा ॥
लज्जारसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ॥ ५१ ॥
पद्मावरधरा गीतिः सुगीतिज्ञानलोचना ॥
सुपुष्परमया तन्त्री षड्जमध्यमदैवता ॥ ५२ ॥
१ गीतवृत्तप्रिया अक्षयः सुखिदा पुष्टिदा क्षया ॥
२ तिष्ठा सत्यप्रिया परव्यालेकेशी सुसुरोत्तमा ॥ ५३ ॥
सावेषाज्वालिनी ज्वाला विषमोद्गातनाशिनी ॥
रक्षाघ्नी राक्षसी रात्रि दीपिनी द्रादिवागतिः ॥ ५४ ॥
मन्द्रिका चन्द्रकातिशयस्यैकातिनिपाचरी ॥
डोकिनी प्राकिनी पिण्या हाकिनी चक्रवाकिनी ॥ ५५ ॥
१ तिष्ठा सत्यप्रिया अक्षयः सुखिदा पुष्टिदा क्षया ॥
२ भूतमीतिद्वारा रक्षा भूतावेशादिनाशिनी ॥

30 MAY 1973 WEDNESDAY

Saka 9 Jyesth 1895

बुधवार ३० मई ज्येष्ठ बदी १३

सितासिताप्रियास्वङ्गा लङ्कला वनदेवता ॥
गुरुनयनरागुर्वी मृत्युमरी विषारदा ॥ ६५ ॥
महामारी विनिन्द्रा च तं द्रामृत्युविनाशिनी ॥
चन्द्रमण्डलसङ्गा श चन्द्रमण्डलवासिनी ॥ ६६ ॥
अणिमादिगुणायता सुस्पृहा कामरूपिणी ॥
अष्टसिद्धिप्रदा प्रौढा दुष्टदानवघातिनी ॥ ६७ ॥
अनादिनिधना पुष्टिश्चतुर्बाहुश्चतुर्मुखी ॥
चतुःस्रुद्रप्रायना चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ ६८ ॥
काशापुष्पप्रतीकाश शरकुमुदलोचना ॥
मृतामन्त्रा भविष्या च प्रौढा प्रौढवासिनी ॥
वामभागरत वामा शिववामाङ्गवासिनी ॥
वामाचारप्रियतुष्टि लोपाङ्ग दाम्पत्यवाधिनी ॥ ७० ॥

31 MAY 1973 THURSDAY

Saka 10 Jyesth 1895

गुरुवार ३१ मई ज्येष्ठ बदी १४

भूतात्मा परमात्मा च भूतभव्यविभाविनी ।
मङ्गला ~~सुख~~ साधुशीलाः परमार्थप्रबोधिका ॥१॥
दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदक्षिणा हरिप्रसूः ।
योगिनी योगयुक्ता च योगाङ्गा ध्यानशालिनी ॥२॥
योगपट्टधुरामुक्ता सुक्ता परमागतेः ॥
नारसिंही सुजन्मा च त्रिवर्गफलदायिनी ॥३॥
धर्मदा धनदा चैका कामदा मोक्षदद्याति ॥४॥
साक्षिणी क्षणदा दक्षा दक्षजा कोटि ~~सुख~~ रक्षि-
कृतुः कात्यायनी स्वस्त्वा स्वहृदा च कविप्रिया ॥
सत्यागमा बोधिः स्वावकाशप्राप्तिः कवित्वदा ॥
मैना पुत्री सती माता मैनाकमणिनी तडित ॥
सौदामिनी सुखमात्र सुधामा धामशालिनी ॥५॥

1 JUNE 1873 FRIDAY

Saka 11 Jyesth 1895

शुक्रवार १ जून ज्येष्ठ अमावस

सौभाग्यदायिनी द्यौश्च सुमगाद्युति वाग्धिनी ।
श्रीकृतिवसना चैव कङ्काली कलिना प्रिणी ॥७०॥
रक्ताबीजवद्योदृष्टा सुतंतुबीजसंततीः ।
जगज्जीवा जगद्धीजा जगत्त्रयदितैषिणी ॥७१॥
चामीकररुचिश्चान्द्री साक्षया प्रोडप्रीकला ॥
यत्तत्पदानुबद्धा व यक्षिणी धनदार्दिता ॥७२॥
चित्रिणी चित्रमाया च विचित्रा भुवनेश्वरी ॥
सामुद्रा मुण्डहस्ता च चण्डमुण्डवद्योदुरा ॥७३॥
अष्टमेकादशी पूर्णा नवमी च चतुर्दशी ॥
अमा कलप्राहस्ता व पूर्णकुम्भपयोधरा ॥७४॥
अभीरुर्मेरवी भीरा मीमा त्रिपुरमैरवी ॥
महार्कटा च रौद्री महामैरवसुजिता ॥७५॥

2 JUNE 1973 SATURDAY

Saka 12 Jyesth 1895

शनिवार २ जून ज्येष्ठ सुदी १-२

निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा कराल दशना नना ॥
कराला विकराला च घोरा घुघुरनादिनी ॥ ८३ ॥
रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च बन्धुकुसुमारुणा ॥
कादम्बरी पटासा च काष्ठीरु कुङ्कुमाप्रिया ॥ ८४ ॥
क्षान्तिबीहु सुवर्णा च मतिबीहु सुवर्णादा ॥
मातङ्गिनी वक्रारोहा मत्तमा तङ्गु गामिनी ॥ ८५ ॥
हिंसाहंसातिहंसी हंसैज्ज्वला शिरोरुहा ॥
पृष्ठी चन्द्रमुखी प्रयामा स्मितास्या प्रयामकुंतला ॥ ८६ ॥
मर्षी च लेखनी लेखा सुलेख लेखक प्रिया ॥
प्राङ्मूली शङ्खहस्ता च जलस्था जलदेवता ॥ ८७ ॥
पुरुक्षेता वक्रिकाशी मथुरा काञ्चवन्तिका ॥
अयोध्या कुशिकामाया तीर्था तीर्थकरप्रिया ॥ ८८ ॥

3 JUNE 1973 SUNDAY

Saka 13 Jyesth 1895

शुक्रवार ३ जून ज्येष्ठ सुदी ३

त्रिपुष्करा प्रमेया च कोशस्था कोषावाहिनी॥
कौशिकी तु कुशावती कोषाम्बी कोषावर्धिनी॥
कोशदा पद्मकोशाक्षी कुसुम्भकुसुमप्रिया॥
तोतुला चतुला कोटिः कोटिस्था कोटराश्रया॥
स्वयम्भूश्च सुगुप्ता च सुरक्षा रूपवर्धिनी॥
तेजस्विनी सुभिक्षा च बलदा बलदायिनी॥
महाकोशी महावती बुद्धिः सदसदात्मिका॥
महाग्रहदुरा सौम्या विप्रेका प्रोक्ता प्रोक्ता॥
सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च राजसी च रजोवृता॥
तामसी च तमोयुक्ता गुणत्रयविभाविनी॥
अव्यक्ता व्यक्तरूपा च वेदविद्या च शाम्भवी॥
शाम्भुकल्याणिनी कल्याणनः सङ्कल्पसन्निधिः॥

4 JUNE 1973 MONDAY

जाग्रतीचक्षुःश्रोत्रंस्पर्शान्महोदधौ तृतीयका

सोमवार ४ जून ज्येष्ठ सुदी ४

सर्वलोकमयी प्राप्तिः सर्वश्रवणगोचरा ।
सर्वज्ञानवती वाञ्छा सर्वतत्त्वावबोधिनी ॥ १५ ॥
स्वरा मन्दगतिर्मन्दा मन्दैरामोदधारिणी ॥
पानभूमिः पानपात्रा पानदानकरोद्यता ॥ १६ ॥
अद्भुताभरणेना च किञ्चिद्व्यकमाश्रिता ।
आद्यायुरा च दीक्षा च दक्षा दीक्षितपूजिता ॥ १७ ॥
नागवल्लीनागकन्या भोगिनी भोगवल्लभा ॥
सर्वशास्त्रवती विद्या सुस्मृतिर्धर्मवादिनी ॥ १८ ॥
श्रुतिः श्रुतिधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा पातालवाहिनी ॥
नीमांसा तर्कविद्या च सुभाकिमकृतसल्ला ॥ १९ ॥
सुनाभिर्योतना जातिगैर्भीराभाववर्जिता ॥
नागपाया चराध्वार्तिरगाद्या नागकुण्डला ॥ २० ॥

5 JUNE 1973 TUESDAY

Saka 15 Jyesth 1895

मंगलवार ५ जून ज्येष्ठ सुदी ५

सुचक्रा चक्रमध्यस्था चक्रकोणानिवासिनी॥
सर्वमंत्रमयी विद्या सर्वमंत्राक्षरावलिः॥१०१॥
मण्डुलवा सवन्तीव भ्रामरी भ्रमरालका॥
मातृमण्डुलमध्यस्था मातृमण्डुलवासिनी॥२॥
कुमारजननी क्रूरा सुमुखी ज्वरनाशिनी॥
अतीता विद्यमान्या च भाविनी प्रतिमंजरी॥३॥
सर्वसौख्यवती युक्तिराहार परिणामिनी॥
निधातुं ये च मृता तां च भवसागरतारिणी॥४॥
अक्रूरा च ग्रहवती विग्रहा ग्रहवर्जिता॥
राहिणी भूमिगर्भा च कालभूः कालवर्जिता॥५॥
कलंकरोहिता नारी चतुष्पष्टयमिधावती॥
जीर्णा च जीर्णावस्था च नृपतानववलम्बिता॥६॥

(१०६)

6 JUNE 1973 WEDNESDAY

Saka 16 Jyesth 1895

बुधवार ६ जून ज्येष्ठ सुदी १५

अजरा नियतिः प्रीतिरतिरागविवर्धनी।
पंचवातगतेभिन्ना पंचश्लेष्माप्रायाधरा॥१०७॥
पंचापित्तवती पंक्तिः पंचस्थानविभाविनी।
ऋतुमतीकामवती बहिः प्रसविणी-व्यहा॥१०८॥
रजःशुक्रधवाप्राक्किजैरायुर्गर्भाधारिणी॥
त्रिकालज्ञात्रिलिङ्गावत्रिभूतिः पुरवाहिनी॥१०९॥
अराणां प्रोवतत्वा च कामतत्त्वानुरागिणी॥११०॥
प्राच्यवाचो प्रतीचीदिगुदीचीदिग्विदिदिप्रा॥
अहंकृतिरहंकारा बलिमाया बलिप्रिया॥१११॥
सुक्लसुवासा मिथ्येती च सुश्रद्धाश्राद्धदेवता॥
माता मातमही तृप्तिः पितृमाता पितामही॥११२॥
हृषादैर्हि त्रिणी पुत्री पौत्री नप्री शिषुप्रिया॥
सतिदासतयारावविश्वयोमिः समन्वयिनी॥

7 JUNE 1973 THURSDAY

Saka 17 Jyesth 1895

गुरुवार ७ जून ज्येष्ठ सुदी ७

शिशुसङ्ग धरा दोला दोला क्रीडा मिनद्विनी ॥
उर्वशी कदली कैका विप्रिखा प्रिखिनार्तिनी ॥
खट्वाङ्ग चामरिणी खट्वा बाणपुङ्गवानुवर्तिनी ॥
लक्ष्यप्राप्तिः काललक्ष्या लक्ष्या च शुभलक्षणा ॥ १२४ ॥
वर्तिनी सुपथाचारा परिरवाचरनिर्वृत्तिः ॥
प्रकारा वलया वेला मर्यादा च महोदयौ ॥ १२५ ॥
पोषणी शोषणी प्राक्किर्दीर्घकैशी सुलोमप्रा ॥
ललिता मांसला तन्वी वेद वेदाङ्ग चारिणी ॥ १२६ ॥
नरासृक्यानमत्ता च नरमुण्डासिमुखणा ॥
अक्ष क्रीडारतिः प्रारी प्रारिका शुकेभाषिणी ॥
प्राम्बरी गारुडी विद्या वारुणी वरुणाचिता ॥
वाराही तुण्डहस्ता च दंष्ट्रा द्रुतवसन्धरा ॥ १२७ ॥

8 JUNE 1973 FRIDAY

Saka 18 Jyesth 1895

शुक्रवार ८ जून ज्येष्ठ सुदी ८

मीनमूर्तिधरा मूर्ता वदान्या प्रतिमाश्रया॥
अष्टमूर्तिर्निर्ध्याया च प्राणिलिङ्गाम् शिलासुतिः॥
स्थितिः संस्काररूपा च संस्कारा च संस्कृतिः॥३॥
प्राकृता देवाभाषा च गाथा गीतिः प्रहेलिका॥४॥
द्वडा च पिबुला पिङ्गासुषुम्णा स्वयंवाहेनी॥५॥
प्राणिस्त्वा च तालस्था काकिनी मृतजीविनी॥
अणुरूपो बृहद्रूपो लघुरूपो गुरुस्थिरा॥६॥
स्थावरा जङ्गमा देवी कृतकर्मफलप्रदा॥७॥
विषयाक्रान्तदेहा च निर्विषा जितेंद्रिया॥
विश्वरूपा चिदानन्दा परंब्रह्मप्रबोधिनी॥८॥
निर्विकारा च निर्वैरा वरतिः सत्त्ववर्धिनी॥
पुरुषात्मानमिन्द्रा च क्षान्तिः केवल्यदायिनी॥९॥

9 JUNE 1973 SATURDAY

Saka 19 Jyesth 1895

शनिवार ६ जून ज्येष्ठ सुदी ६

विविक्कसैविनी प्रह्लाजनायेत्री बहुश्रुतिः॥
मिरीहा च समस्तेहा सर्वलोकैकसैवित॥१२४॥
सेवा सेवा प्रिया सेव्या सेवफलविवर्धिनी॥
कलौ कल्किप्रिया काली दुष्टहृच्छविनाशिनी॥१२५॥
प्रत्यञ्चा वधु धनुर्यष्टिः खड्गधारादुरानतिः॥
अश्वहृतिश्च वल्गा च सृणिः सन्मत्तवारुणा॥१२६॥
वीरमूवीरमाता च वीरस्ववीरबन्दिनी॥
जयश्रीजयदीक्ष॥ च जयस्था जयवर्धिनी॥
सौभाग्यसमगाकारा सर्वसौभाग्यवर्धिनी॥
क्षेमङ्करी सिद्धिदया सत्कीर्तिः पथिदेवता॥१२७॥
सर्वतीर्थमयीक्षितिः सर्वदेवमयी प्रभा॥
सर्वसिद्धिप्रदायाकः सर्वमङ्गलमङ्गला॥

॥१२८॥

10 JUNE 1973 SUNDAY

Saka 20 Jyesth 1895

रविवार १० जून ज्येष्ठ सुदी १०

पुण्यं सहस्रनामेदमम्बाया रुद्रमाषितम् ॥
चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम् ॥
नातः परतरो मंत्रो नातः परतरः स्तवः ॥
नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परं परम् ॥
ते अन्यः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः ॥
एकभावं सुदानित्यं ये च यन्ति मद्देश्वरीम् ॥
देवतानां देवता या ब्रह्माद्यै यो च पूजिता ॥
भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्रमंगला ॥
एतामेव पुराराध्य विद्यां त्रिपुरभरवीम् ॥
त्रैलोक्यमोहनं रूपमकाशीं दुर्गावद्भरिः ॥
मायाकुण्डलीं अनेन मंत्रपाठेन आन्मनः
इति श्रीरुद्रयामाले तन्त्रे नन्दिकेश्वरसंवादे
महाप्रभावा भवानीनमसहस्रस्तवराजः
समाप्तः ॥ ॐ ॥

11 JUNE 1973 MONDAY

Saka 21 Jyesth 1895

सोमवार ११ जून ज्येष्ठ सुदी ११

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रमंत्रस्य, पुरन्दर ऋषिः
अनुष्ठुप् छन्दः, श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता,
ह्रीं बीजं, भुवनेश्वरी प्राक्किः, माहेश्वरी कूलकं,
गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं, अत्मना
इन्द्राक्षी पाठे विनियोगः ॥

लक्ष्म्यै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, भुवनेश्वर्यै तज्जनी
भ्यां नमः, माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः,
वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां नमः,
सहस्रनयनायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
इन्द्राक्षी भगवत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां
नमः ॥ इति करन्यासः ॥

12 JUNE 1973 TUESDAY

Saka 22 Jyesth 1895

मंगलवार १२ जून ज्येष्ठ सुदी १२

अथ षडङ्गन्यासः॥

ॐ लक्ष्म्यै हृदयाय नमः, भुवनेश्वर्यै धिरसे
स्वाहा॥ मातृश्वर्यै धिररायै वषट् । ब्रजह-
स्तार्यै कवचाय हुँ, सहस्रनयनार्यै नेत्रा-
भ्यां वौषट्, इन्द्रोक्षीभगवत्यै अस्त्राय कट् ।

प्राणायामः

ॐ इन्द्रोक्षीध्विभुजादेवी पीतवस्त्रधरा शुभाम् ।
नामे वज्रधरां सत्यहस्ता मय वर प्रदाम् ॥
सहस्रनेत्रां स्वर्गभां नानालङ्कारभूषिताम् ॥
प्रसन्नवदनां नित्यामृतरागणसेविताम् ॥
श्रीगुणौघाभ्यवदनां पाशाङ्गुपाधरां पराम् ॥
त्रैलोक्यमाहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ॥

13 JUNE 1973 WEDNESDAY

Saka 23 Jyesth 1895

बुधवार १३ जून ज्येष्ठ सुदी १३

श्री इन्द्र उवाच॥

द्वन्द्याक्षी नाम सा देवी देवता समुदाहृता॥
गौरी प्राकम्बरी देवी दुर्गानाम्नेति विश्रुता॥
काल्यायनी महादेवी चण्डिका महातया॥
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी॥
नारायणी मदकाली कद्राणी कृष्णापिङ्गला॥
अग्निज्वाला रुद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी॥
मेघप्रयामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलादरी॥
महादरी मुक्तकेषी घोररूप महाबला॥
मानन्दा मदजा नन्दा रोगहत्री शिवप्रिया॥
शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी॥
इन्द्राणी चन्द्ररूपी च इन्द्रप्राक् परायणा॥

14 JUNE 1973 THURSDAY

Saka 24 Jyesth 1895

गुरुवार १४ जून ज्येष्ठ सुदी १४

महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा नमो देवता ॥
वराहो नारासिंही च भीमा भैरवनाथिनी ॥
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥
अनन्ता विजया पूर्णा मनस्तोषा पराजिता ॥
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ॥
शिवा भवानी कद्राणी शङ्कराद्यशिरोरिणी ॥॥
हृत्तैर्नामप्रदैर्दिव्यै स्तुता प्राक्केन धीमता ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं क्षयसम्पत्तिकारकम् ॥
क्षयप्रस्मारकुष्टादितापज्वरनिवारकम् ॥
प्रातः प्रावर्तयेद्यस्तु सुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
आवर्तयेत्सहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ॥
राजा वशमवाप्नोति सत्यमेव न संप्राप्य ॥

15 JUNE 1973 FRIDAY

Saka 25 Jyesth 1895

शुक्रवार १५ जून ज्येष्ठ पूर्णिमा

लक्ष्मीकं जपेदास्तु साक्षाद्देवी संप्रपूयति ॥
त्रिकालं पठेत् नित्यं धनधान्यादिश्च संपदः ॥
अथ रात्रे पठेत् नित्यं सुच्यते व्यादिवंधनात् ॥
ऐं इस्तात्रमिदं पुण्यं जपेत् फलवर्धनम् ॥
विनायाय तु रोगाणामपहृत्युहाराय च ॥
राज्याय लभते राज्यं धनार्थं विपुलं धनम् ॥
इच्छाकामं तु कामार्थं धर्मार्थं धर्ममव्ययम् ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थं परमं पदम् ॥
इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥
ॐ या माया मेदु कैटभप्रमथिनी या मा-
हिषोन्मूलिनी या धूम्रमेकावणुमुण्डमथि-
नी या रक्तबीजाशनी ॥ प्राप्तिप्राप्तम् ॥

16 JUNE 1973 SATURDAY

Saka 26 Jyesth 1895

शनिवार १६ जून आषाढ वदी १

निशामुदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मी प्रसा,
सा देवी नवकोटिस्मृतिरहितो मां पातु
मां हे श्वरी ॥

जपे पापहरं नृते बलकरं सम्युज्जितं श्रीकरं
ध्याते मानकरं ह्युत धनकरं सम्माषितं
सिद्धिदम् ॥ गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते
ते पादपद्मद्वयं भक्तानां भवभीतिभञ्जन
करं सिद्धयष्टदं पातु नः ॥ तर्पणम् ॥
माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली
कला मालिनी मातङ्गी विजया जया
भगवती देवी श्रि वा श्रीमती ॥
शक्तिः प्राङ्मुखवत्सु मां त्रिनयना वारवा-

17 JUNE 1973 SUNDAY

Saka 27 Jyesth 1895

रविवार १७ जून आषाढ बदी २

दिनी मैरवी, द्वीकारी त्रिपुरा परापरम्य
माता कुमारीत्यसि ॥

अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनो वाङ्मनः
कायोपाजितपापनिवारणार्थं श्री
इष्टदेवी शारिकाभगवती प्रीत्यर्थं
भगवती अमा, कामा, चार्वङ्गी, टङ्क
आरिणी, तारा, पार्वती, यक्षिणी,
श्रीशारिकाभगवती, श्रीशारदाभगव
ती, श्रीमहारानी भगवती, श्रीज्वाला
भगवती, व्रीडाभगवती, वैखरीभगवती,
विलस्ताभगवती, गङ्गाभगवती, यमुना
भगवती, कालिकाभगवती, सिद्धलक्ष्मी

18 JUNE 1973 MONDAY

Saka 28 Jyesth 1895

सोमवार १८ जून आषाढ बदी २

महात्रिपुरसुन्दरी, सहस्रनाम्नी देवी
भवानी सपरिकारी, सचदना, सायुध
साङ्गी प्रीयतां प्रीतास्तु ॥
इति इन्द्राक्षिलौत्रं सम्पूजितम् ॥

अथ प्रारिका कवचम् ॥

श्री भैरव उवाच ॥

ॐ अधुना शृणु देवेशि प्रारिका कवचं परम् ॥
त्रैलोक्यमोहते नाम मूलमंत्रमये परम् ॥
अस्य श्रवणमन्त्रेण सर्वयज्ञफलं लभेत ॥
सर्वापत्तारणं दिव्यं सर्वसिद्धिप्रदं कलौ ॥
सर्वस्य मे रहस्यं मे परमं परमाद्भुतम् ॥

19 JUNE 1973 TUESDAY

Saka 29 Jyesth 1895

मंगलवार १९ जून आषाढ बदी ३

धारणादस्य देवो प्राविष्णुना स जलोद्भवः
दानवेन्द्रो हतः श्रीधुमन्धकारो यथेन्दुना ॥
मयापि त्रिपुराध्यक्षो दानवो जिष्णुना बलः ॥
जम्भो वृत्रासुरो देवि प्रभावादस्य वर्मणः ॥
कुवचस्यास्य देवोऽस्मिन् ऋषिर्भैरव ईरितः ॥
त्रिष्टुप्छन्दो देवता च त्रैलोक्यमोहिनीश्वरी
प्राग्देवा प्रामेबीजं च मायाशक्तिः कीलकं गजः ॥
त्रैलोक्यमोहविद्याभं विनियोगः प्रकीर्तितः ॥
ॐ मे दुर्गा शिरः पादा देवाक्षरविभूषणा ॥
ॐ ह्रीं वण्डील्लालं मे जगद्गुल्लालरूपिणी ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अक्षरापातु भुवामे भगमा लिनी ॥
ॐ ह्रीं श्रीं हृन् च नेत्रव्यासवे सङ्गलया बुद्धिः ॥

20 JUNE 1973 WEDNESDAY

Saka 30 Jyesth 1895

बुधवार २० जून आषाढ बदी ४

ॐ ह्रीं श्रीं हूं कामऽयान्ने श्रुती प्राङ्मुख वल्लभा ॥
ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां अं पातु नासं नारायणेश्वरी ॥
ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां अं प्रो मे पातु वक्र सरस्वती ॥
अं अं इं इं रदा न्यातु मातृकेश्वरी ॥
उं ऊं मूं लूं लूं हूं हूं पायादेष्टी भवप्रिया ॥
ओं औं अं अं गलं पातु नीलकण्ठासनेश्वरी ॥
कं खं गं घं डं मे पातु स्कन्धा स्कन्धसमाविता ॥
चं छं जं मं जं मे पायाद्वशा वामप्रियाम्बिका ॥
टं ठं डं ढं णं मे पायात्पार्श्वी पर्वतनादिनी ॥
ते थं दं धं नं मे पातु कुक्षिं कुलकुलेश्वरी ॥
पं फे वं मं मे मे पातु नाभिं नारदसहिता ॥
ये रं लं वं मुदं पातु गुह्यकेश्वर पूजिता ॥

21 JUNE 1973 THURSDAY

Saka 31 Jyesth 1895

गुरुवार २१ जून आषाढ़ बदी ५

प्रां घं हं हं कटिं पातु देवी कात्यायनी ^{तथा} ~~सदा~~
लं दं ऊर्ध्वं सदा पातु सर्वसारस्वतप्रदा ॥
ॐ प्रां जानू शिवा पातु ॐ अं जंडु वतादुमा ॥
ॐ प्रां पादौ सदा पातु राजमातङ्गिनी मम।
ॐ हं पादादिमूर्धान्तं वपुर्मे पातु कुण्डिका ॥
ॐ श्रीं मूर्धोदिपादान्तं वपुर्मे पातु शारदा ॥
ॐ ह्रीं संप्रक्षरी पातु प्रगारका सकलवपुः
ध्वं मां पातु ब्रह्मणी वैद्यैर्भै वैष्णवी सदा
दक्षिणेऽवतु मां चण्डी नैवृते मेऽपराजिता ॥
पश्चिमेऽवतु कौमारी वायव्ये शाम्भवी च मम ॥
वरही चोत्तरी पायादीशाने नारसिंहिका ॥
प्रभाते मामुमा पातु मध्ये कामाक्ष्यतान्त्रिका ॥

22 JUNE 1973 FRIDAY

Saka 1 Asadh 1895

शुक्रवार २२ जून आषाढ़ वशी ६

चावेङ्गीमादिनान्तेऽव्याहृष्टादौटङ्कधादिनी॥
निष्प्रौथेऽव्यादुग्रतारा निष्प्रान्ते पावती व माम्॥
सर्वत्र यक्षिणी पातु शिवा मां पातु सर्वदा॥
असिताङ्गुः क्षितेः पातु रुरुमां पातु पाथसः॥
चण्डो मां पातु मरुतः क्रोधाऽव्याहृताप्रानात्॥
उन्मत्तः सोमत्तः पातु कपालीसूर्यतौऽवतु॥
भीषणा यज्ञविघ्नात्तु संहारः शून्यमण्डलात्॥
रणे मां कालिका पातु द्यूते त्रिपुरसुन्दरी॥
दुर्गाऽवतु विवादे वा श्रीचिंक्रं सर्वदाऽवतु॥
सर्वत्र सर्वदा देवी पातु मां प्रार्थिका परा॥
घने पुत्रसुतान्दारात् गृहे यद्यात्तु मामकम्॥
तत्तन्मम शिवः पातु वामदेवो विदीश्वरः॥

23 JUNE 1973 SATURDAY

Saka 2 Asadh 1895

अनिवार्यं पुण्यं कर्म ॥

इत्येतत्कवचं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥
त्रैलोक्यमोहनं नाम शारिकाया रहस्यकम् ॥
विनाऽमुना न सिद्धिः स्यात्कवचेन्द्रेण पर्वति ॥
कोटिलक्ष्य प्रजप्तस्य मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ॥
तस्मात्पठेच्छिवे वर्ममनुगर्भम् अनुक्षणम् ॥
सर्वोत्पातप्रणामनं बलबुद्धिप्रवर्धनम् ॥
परमानन्ददं लोके परमैश्वर्यकारणम् ॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदापि ॥
स एव मेरवाद्यक्षसैलोक्यविजयी विभुः ॥
रवौ भूजैर्लिखेद्धर्मस्वयम्भूकुसुमस्रजम् ॥
कुसुमेनाष्टगन्धेन स्तन्येन निजरेत सा ॥
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ प्राप्नुयात्परमं गतिम् ॥

24 JUNE 1973 SUNDAY

Saka 3 Asadh 1895

रविवार २४ जून आषाढ़ बदी ८

धनकामी लभे द्वि तं पुत्रकामी लभे त्रजाम् ॥
बणे विपूढो हत्वा कल्याणी गृहमाविशे ॥
धृत्वा वक्षसि देवेषु वारिमत्वं जायते क्षणात् ॥
वन्द्या च काकवन्द्या च मृतवत्सालभे सुतान् ॥
माकीर्ण्डेया युषो देवि साक्षाद्वै श्वर्णोपमान् ॥
किं किं न लभते मर्त्यः पठन्कवचमुत्तमम् ॥
यः पठेदर्थरात्रे तु शम्भुने मुक्ककुन्तलः ॥
पीत्वा श्रीद्युं स देवेषु देवीदप्रीनमाप्नुयात् ॥
सम्भयेद्भास्करं वायुं मोहयेत् त्रिजगद्भुवम् ॥
बहु किं कथ्यतां तस्य कवचस्यास्य धारणात् ॥
पठेन्नाच्छ्ववणाद्यापि स भवेद्दैरवोपमः ॥
इतीदं कवचं देवैर्त्रैलोक्यवशाकारणम् ॥

25 JUNE 1973 MONDAY

Saka 4 Asadh 1895

सोमवार २५ जून आषाढ़ वदी ६

त्रैलोक्यमोहनं नाम गोपनीयं सुरेश्वरि॥
यस्य कस्य न दातव्यं विना प्रियेण पार्वति॥
दाक्षिताय कुलीनाय दत्वा मोक्षमवाप्नुयात्॥
विना दानं न दृष्टीया न दद्याद्दक्षिणं विना॥
दत्वा दृष्टीत्वाऽप्युभयैः सिद्धिर्हा निर्भवेद्दुवश्र
अन्यथा यस्तु दृष्टीया दद्याद्वा कवचेश्वरम्॥
पुत्रान्दारांस्तुताश्चैव योगिन्यो भक्षयन्ति तम्॥
अज्ञात्वा कवचं देवि पूजयेच्छ्रीशिलो शिवे॥
स भवेच्छिवहा सत्यं सैवापद्रवसंकुलः॥
धृत्वा यः कवचं देवि पूजयेच्छ्रीशिलो शिवे॥
स खच परमां सिद्धिं लभते नात्र संशयः॥
इतीदं कवचं देवि सारं सर्वस्वसूक्तमयम्॥

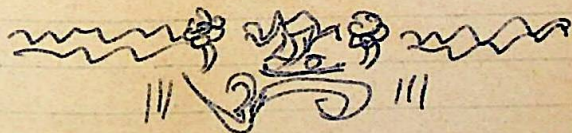
26 JUNE 1973 TUESDAY

Saka 5 Asadh 1895

मंगलवार २६ जून आषाढ बदी १०

रहस्यं प्रारि कार न गोपनीयं स्वयोनित्वा

इति श्रीरुद्रियामले तन्त्रे प्रारिका-
कवचं समाप्तम् ॥



29 JUNE 1973 FRIDAY

Saka 8 Asadh 1895

गुरुवार २६ जून आषाढ बदी १४

30 JUNE 1973 SATURDAY

Saka 9 Asadh 1895

शनिवार ३० जून आषाढ़ अमावस

1 JULY 1973 SUNDAY

Saka 10 Asadh 1895

रविवार १ जुलाई आषाढ़ सुदी १

2 JULY 1973 MONDAY

Saka 11 Asadh 1895

सोमवार २ जुलाई आषाढ़ सुदी २

3 JULY 1973 TUESDAY

Saka 12 Asadh 1895

मंगलवार ३ जुलाई आषाढ़ सुदी ३-४

4 JULY 1973 WEDNESDAY

Saka 13 Asadh 1895

बुधवार ४ जुलाई आषाढ़ सुदी ५

5 JULY 1973 THURSDAY

Saka 14 Asadh 1895

गुरुवार ५ जुलाई आषाढ सुदी ६

6 JULY 1973 FRIDAY

Saka 15 Asadh 1895

शुक्रवार ६ जुलाई आषाढ सुदी ७

7 JULY 1973 SATURDAY

Saka 16 Asadh 1895

शनिवार ७ जुलाई आषाढ़ सुदी ८

8 JULY 1973 SUNDAY

Saka 17 Asadh 1895

रविवार ८ जुलाई आषाढ सुदी ६

11 JULY 1973 WEDNESDAY

Saka 20 Asadh 1895

बुधवार ११ जुलाई आषाढ़ सुदी ११

12 JULY 1973 THURSDAY

Saka 21 Asadh 1895

गुरुवार १२ जुलाई आषाढ़ सुदी १२

13 JULY 1973 FRIDAY

Saka 22 Asadh 1895

शुक्रवार १३ जुलाई आषाढ़ सुदी १३

14 JULY 1973 SATURDAY

Saka 23 Asadh 1895

शनिवार १४ जुलाई आषाढ सदी १४

15 JULY 1973 SUNDAY

Saka 24 Asadh 1895

रविवार १५ जुलाई आषाढ़ पूर्णिमा

16 JULY 1973 MONDAY

Saka 25 Asadh 1895

सोमवार १६ जुलाई सावन वदी १

17 JULY 1973 TUESDAY

Saka 26 Asadh 1895

पंगलवार १७ जुलाई माघन बदी २

22 JULY 1973 SUNDAY

Saka 31 Asadh 1895

रविवार २२ जुलाई सावन बदी ७

23 JULY 1973 MONDAY

Saka 1 Sawan 1895

सोमवार २३ जुलाई सावन बदी ८

24 JULY 1973 TUESDAY

Saka 2 Asadh 1895

मंगलवार २४ जुलाई सावन वदी ६

3

NOTES

NOTES

